



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

Shashikant Maurya
28/02/1999 01:10 PM
Gutwan, Uttar Pradesh

निर्मित

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	28/02/1999
जन्म समय	13:10
जन्म स्थान	Gutwan, Uttar Pradesh
अक्षांश	25 N 37
देशांतर	82 E 41
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	23:50:43
सूर्योदय	6:24:1
सूर्यास्त	18:0:6

घात चक्र

महीना	आषाढ़
तिथि	2,7,12
दिन	सोमवार
नक्षत्र	स्वाति
योग	परिघ
करण	कौलव
प्रहर	3
चंद्र	9

पंचांग विवरण

तिथि	शुक्ल चतुर्दशी
योग	अतिगण
नक्षत्र	अश्लेषा
करण	गर

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
योनि	मार्जार
गण	राक्षस
नाड़ी	अंत्य
जन्म राशि	कर्क
राशि स्वामी	चन्द्र
नक्षत्र	अश्लेषा
नक्षत्र स्वामी	बुध
चरण	2
युग्जा	मध्य
तत्त्व	जल
नामाक्षर	दू
पाया	चांदी
लग्न	मिथुन
लग्न स्वामी	बुध

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्रा	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	कुम्भ	15:25:17	शनि	शतभिसा	राहु	नौवां
चन्द्र	--	कर्क	21:42:47	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	दूसरा
मंगल	--	तुला	16:28:42	शुक्र	स्वाति	राहु	पाँचवां
बुध	--	मीन	02:59:56	गुरु	पूर्व भाद्रपद	गुरु	दसवां
गुरु	--	मीन	09:36:14	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	दसवां
शुक्र	--	मीन	14:05:41	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	दसवां
शनि	--	मेष	06:05:09	मंगल	अश्विनी	केतु	ग्यारहवां
राहु	हाँ	कर्क	27:27:55	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	दूसरा
केतु	हाँ	मकर	27:27:55	शनि	धनिष्ठा	मंगल	आठवां
लग्न	--	मिथुन	12:50:07	बुध	आर्द्रा	राहु	पहला



सूर्य

कुम्भ
शतभिसा

हानिप्रद



चन्द्र

कर्क
अश्लेषा

सम



मंगल

तुला
स्वाति

हानिप्रद



बुध

मीन
पूर्व भाद्रपद

सम



गुरु

मीन
उत्तर भाद्रपद

हानिप्रद



शुक्र

मीन
उत्तर भाद्रपद

योगकारक



शनि

मेष
अश्विनी

लाभप्रद



राहु

कर्क
अश्लेषा

--



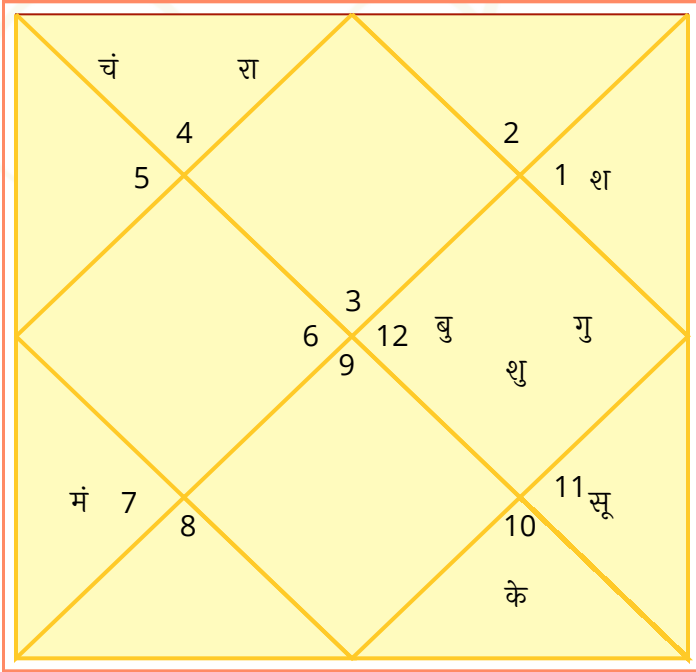
केतु

मकर
धनिष्ठा

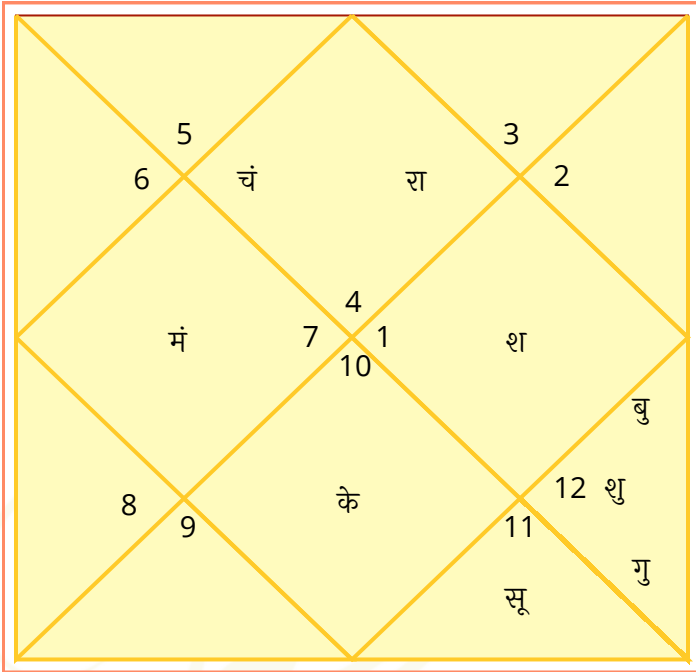
--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

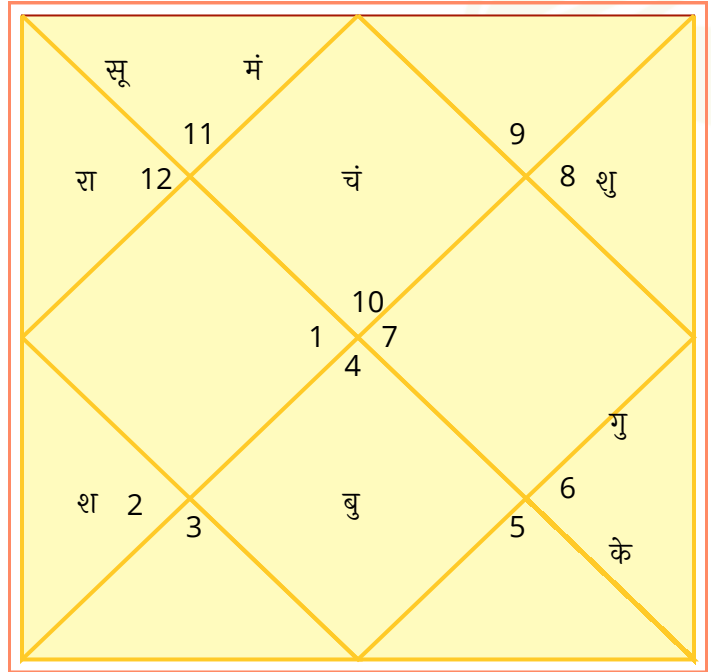


व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते हैं। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओं और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।



चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।



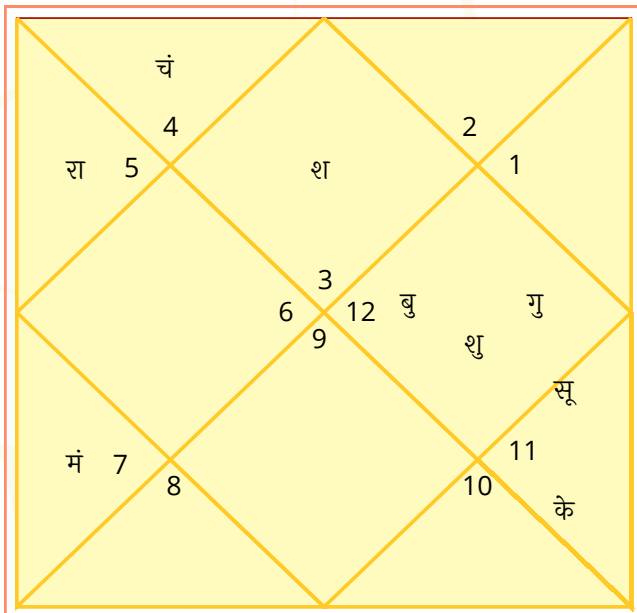
नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थिति उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रूप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

लग्न - 12:50:07 दशम भाव मध्य - 01:06:54

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	मिथुन	12:50:07	मिथुन	25:52:55
2	कर्क	08:55:43	कर्क	21:58:31
3	सिंह	05:01:19	सिंह	18:04:06
4	कन्या	01:06:54	कन्या	18:04:06
5	तुला	05:01:19	तुला	21:58:31
6	वृश्चिक	08:55:43	वृश्चिक	25:52:55
7	धनु	12:50:07	धनु	25:52:55
8	मकर	08:55:43	मकर	21:58:31
9	कुम्भ	05:01:19	कुम्भ	18:04:06
10	मीन	01:06:54	मीन	18:04:06
11	मेष	05:01:19	मेष	21:58:31
12	वृष	08:55:43	वृष	25:52:55

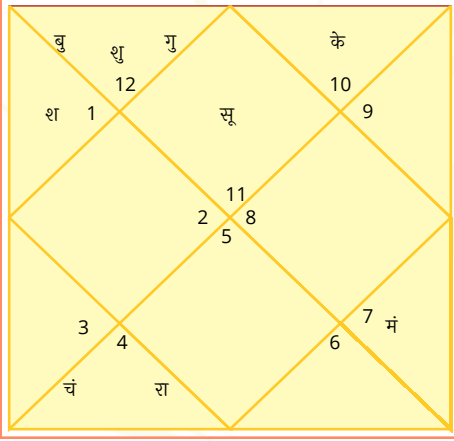
चलित कुंडली



लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

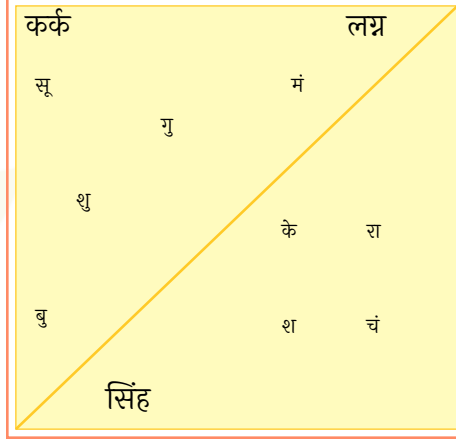
वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली



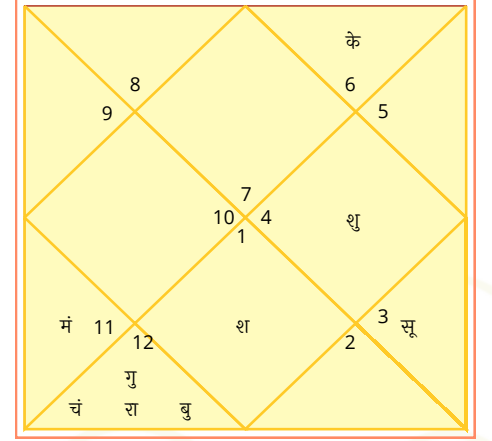
शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली



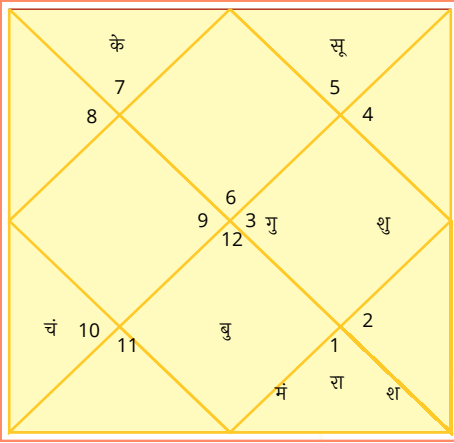
वित्त, धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली



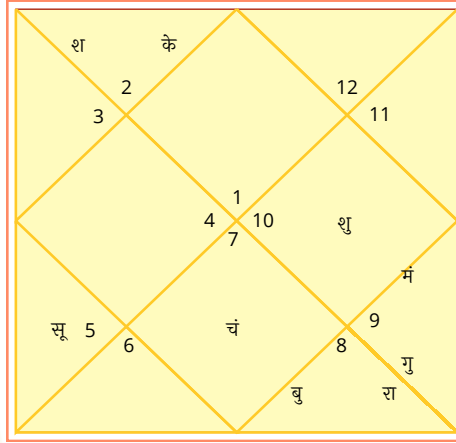
भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली



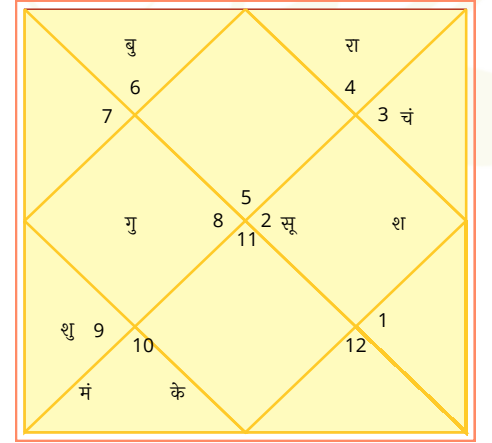
भाग्य

पंचमांश कुंडली



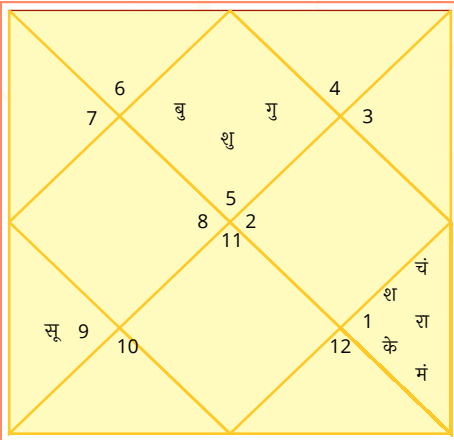
आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली



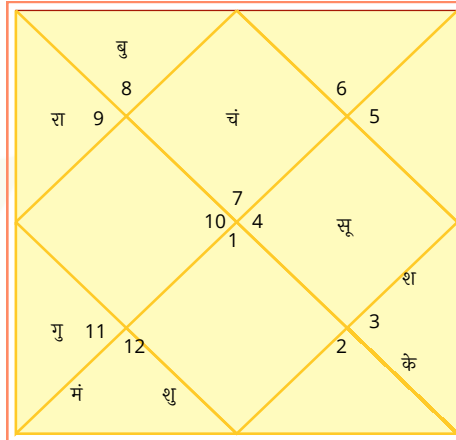
सन्तान

अष्टमांश कुंडली



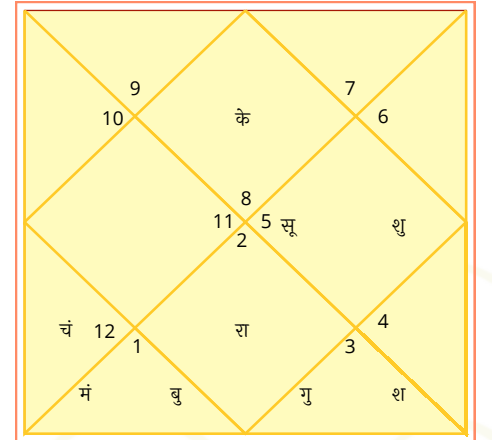
आयु

दशमांश कुंडली



व्यवसाय, जीवनयापन

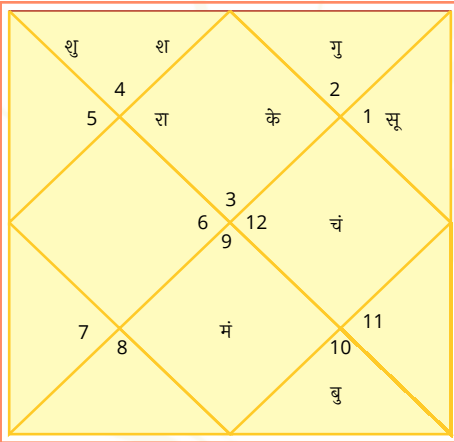
द्वादशांश कुंडली



माता-पिता, पैतृक सुख

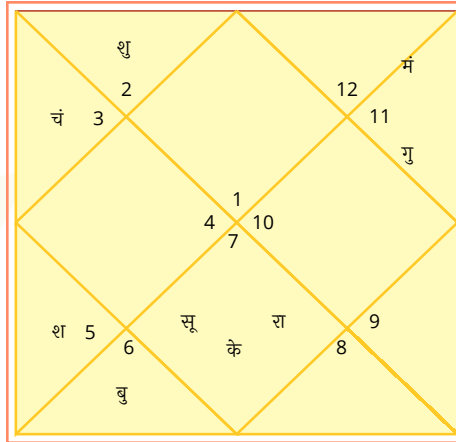
वर्ग कुंडली

षोडशांश कुंडली



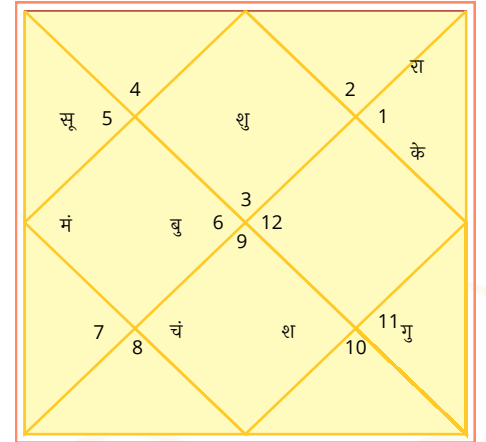
सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली



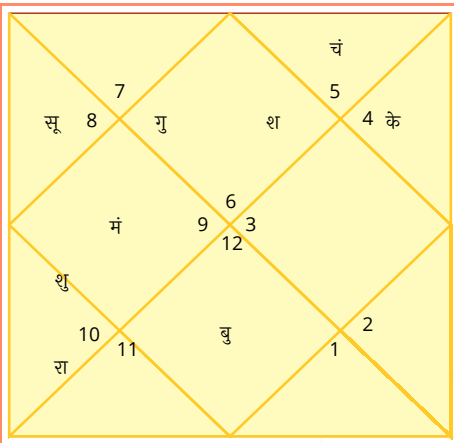
आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विंशांश कुंडली



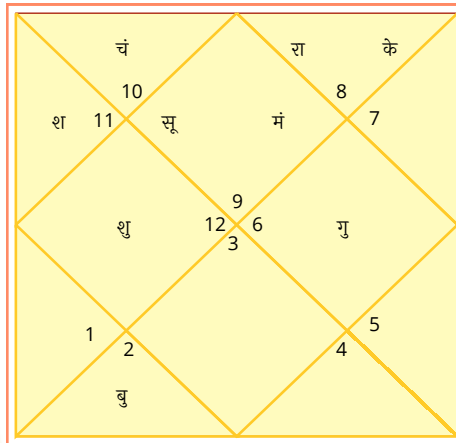
शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली



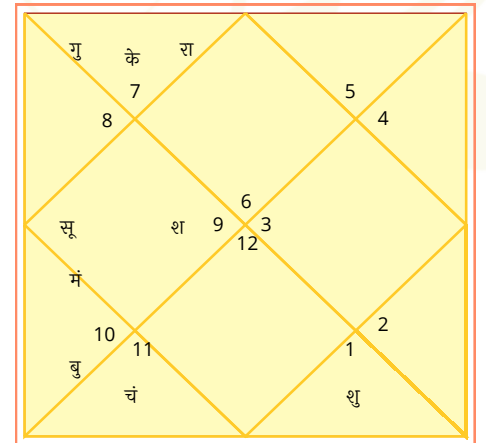
शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली



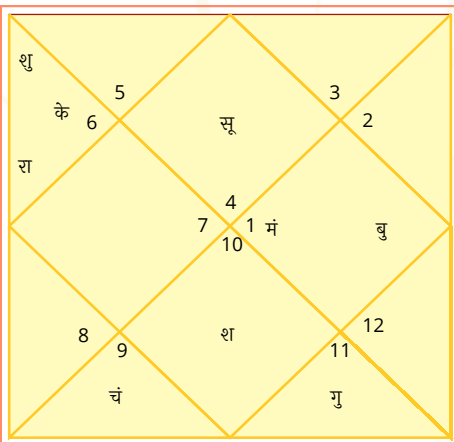
बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली



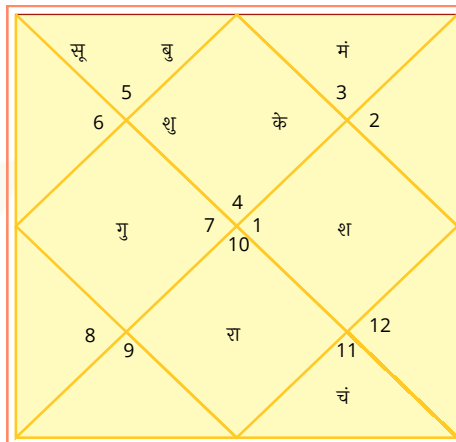
शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली



जातक का चरित्र और आचरण

षष्ट्यांश कुंडली



सामान्य खुशियाँ

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री



ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--

तात्कालिक मैत्री



ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	--	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	--	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	--	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	--	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	--	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	--

पंचधा मैत्री



ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	सम	सम
चंद्र	सम	--	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	सम	अतिमित्र	--	अतिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु
बुध	अतिमित्र	अतिशत्रु	शत्रु	--	शत्रु	सम	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	अतिशत्रु	--	अतिशत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अतिशत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	--	अतिमित्र
शनि	सम	सम	अतिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	--

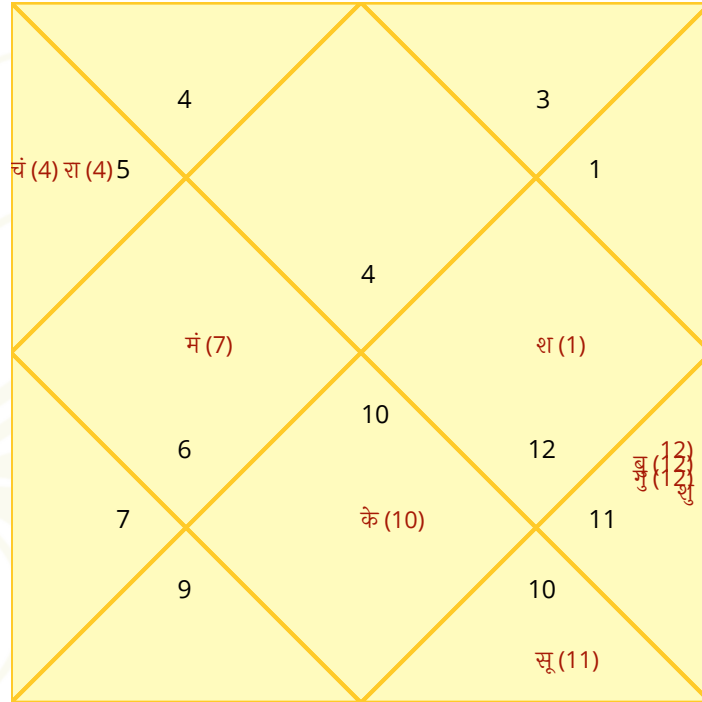
कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्त्र	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	कुम्भ	315:25:17	शनि	नौवां
चन्द्र	--	कर्क	111:42:47	चन्द्र	दूसरा
मंगल	--	तुला	196:28:42	शुक्र	पाँचवां
बुध	--	मीन	332:59:56	गुरु	दसवां
गुरु	--	मीन	339:36:14	गुरु	दसवां
शुक्र	--	मीन	344:05:41	गुरु	दसवां
शनि	--	मेष	06:05:09	मंगल	ग्यारहवाँ
राहु	हाँ	कर्क	117:27:55	चन्द्र	दूसरा
केतु	हाँ	मकर	297:27:55	शनि	आठवाँ
लग्न	--	मिथुन	72:50:07	बुध	पहला

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	चरण	सब	सब-सब
सूर्य	शतभिसा	राहु	3	शुक्र	शुक्र
चन्द्र	अश्लेषा	बुध	2	सूर्य	राहु
मंगल	स्वाति	राहु	3	शुक्र	गुरु
बुध	पूर्व भाद्रपद	गुरु	4	राहु	सूर्य
गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	2	शुक्र	शनि
शुक्र	उत्तर भाद्रपद	शनि	4	राहु	केतु
शनि	अश्विनी	केतु	2	राहु	गुरु
राहु	अश्लेषा	बुध	4	गुरु	चन्द्र
केतु	धनिष्ठा	मंगल	2	गुरु	चन्द्र
लग्न	आर्द्रा	राहु	2	बुध	केतु

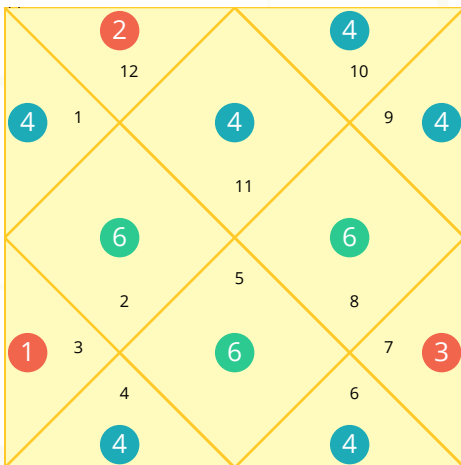
कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	कर्क	96:40:51	चन्द्र	पुष्य	शनि	बुध	राहु
2	कर्क	119:57:18	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	शनि	गुरु
3	सिंह	145:14:14	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	बुध	राहु
4	कन्या	174:57:37	बुध	चित्रा	मंगल	राहु	शनि
5	तुला	209:14:46	शुक्र	विशाखा	गुरु	सूर्य	बुध
6	धनु	244:25:41	गुरु	मूल	राहु	शनि	केतु
7	मकर	276:40:51	शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	बुध	गुरु
8	मकर	299:57:18	शनि	धनिष्ठा	मंगल	शनि	गुरु
9	कुम्भ	325:14:14	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	बुध	गुरु
10	मीन	354:57:37	गुरु	रेवती	बुध	राहु	शनि
11	मेष	29:14:46	मंगल	कृत्तिका	सूर्य	राहु	राहु
12	मिथुन	64:25:41	बुध	मृगशिरा	मंगल	शुक्र	शनि



सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	0	0	0	1	1	4
वृषभ	1	1	1	1	0	0	1	1	6
मिथुन	0	0	1	0	0	0	0	0	1
कर्क	0	0	1	1	1	0	1	0	4
सिंह	1	0	1	1	1	1	0	1	6
कन्या	1	1	0	0	0	1	0	1	4
तुला	1	0	1	0	0	0	1	0	3
वृश्चिक	1	0	1	1	1	0	1	1	6
धनु	1	1	0	1	0	0	1	0	4
मकर	0	0	1	1	1	0	1	0	4
कुंभ	1	0	0	1	0	1	1	0	4
मीन	1	0	0	0	0	0	0	1	2



अभिप्राय

पिता

व्यक्तिगत प्रभाव

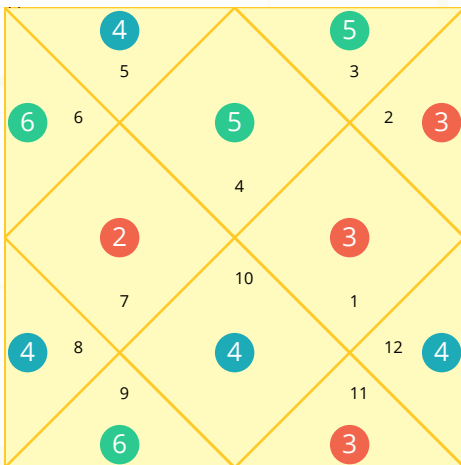
राजकीय कृपा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	0	0	0	0	0	1	3
वृषभ	0	1	0	1	0	1	0	0	3
मिथुन	0	0	1	1	1	1	1	0	5
कर्क	1	1	1	1	0	1	0	0	5
सिंह	1	0	1	0	0	0	1	1	4
कन्या	1	1	0	1	1	1	1	0	6
तुला	0	0	0	1	1	0	0	0	2
वृश्चिक	1	0	1	0	0	1	0	1	4
धनु	1	1	1	1	1	1	0	0	6
मकर	0	1	0	1	1	1	0	0	4
कुंभ	0	0	1	0	1	0	1	0	3
मीन	0	0	1	1	1	0	0	1	4



अभिप्राय

माता

मन

भावना

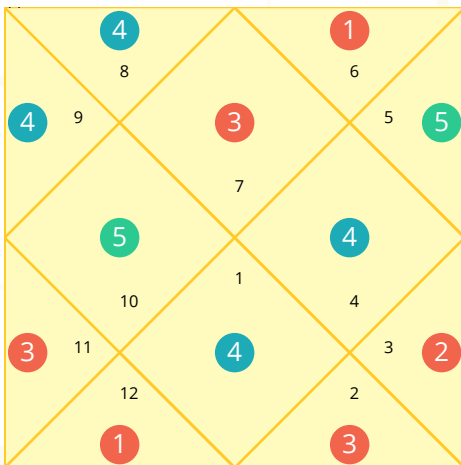
बुद्धि

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	0	0	0	1	1	4
वृषभ	0	1	1	1	0	0	0	0	3
मिथुन	1	0	0	0	0	0	0	1	2
कर्क	1	0	1	1	0	0	1	0	4
सिंह	0	0	1	1	1	1	0	1	5
कन्या	0	1	0	0	0	0	0	0	1
तुला	0	0	1	0	0	1	1	0	3
वृश्चिक	1	0	1	0	0	0	1	1	4
धनु	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मकर	0	0	1	1	1	1	1	0	5
कुंभ	0	0	0	0	1	1	1	0	3
मीन	0	0	0	0	0	0	0	1	1



अभिप्राय

भाई-बहन

भूमि-संपत्ति

दुध?टना

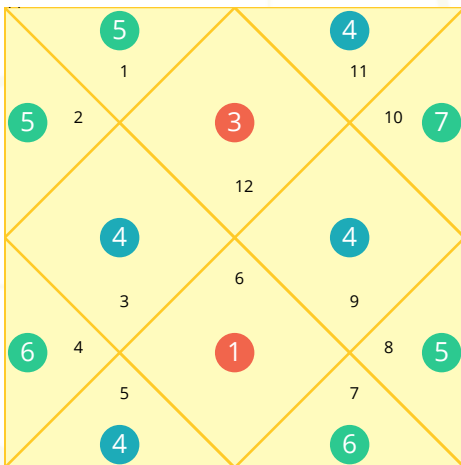
विवाद

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

बुध भित्राष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	0	0	1	1	1	5
वृषभ	0	1	1	1	0	1	1	0	5
मिथुन	1	0	1	0	0	1	0	1	4
कर्क	1	0	1	1	0	1	1	1	6
सिंह	0	1	1	1	1	0	0	0	4
कन्या	0	0	0	0	0	0	0	1	1
तुला	1	1	1	0	1	1	1	0	6
वृश्चिक	0	0	1	1	0	1	1	1	5
धनु	1	1	0	1	0	0	1	0	4
मकर	1	0	1	1	1	1	1	1	7
कुंभ	0	1	0	1	1	0	1	0	4
मीन	0	0	0	1	0	1	0	1	3



अभिप्राय

रिश्तेदार

वक्तृता

विवेकबुद्धि

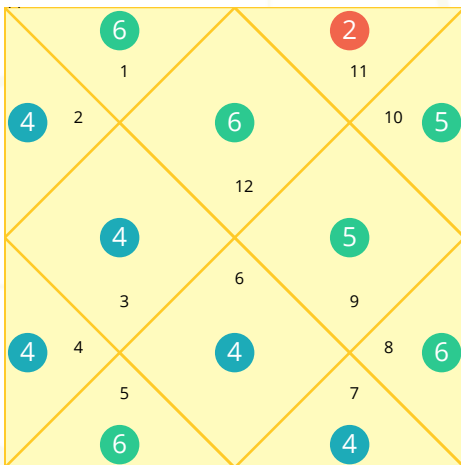
शिक्षा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

गुरु भित्ताष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	1	1	1	0	1	6
वृषभ	1	1	1	0	1	0	0	0	4
मिथुन	0	0	0	1	1	0	1	1	4
कर्क	0	0	1	1	0	1	0	1	4
सिंह	1	1	1	1	0	1	1	0	6
कन्या	1	0	0	0	1	0	1	1	4
तुला	1	0	1	0	1	0	0	1	4
वृश्चिक	1	1	1	1	0	1	0	1	6
धनु	1	0	0	1	1	1	0	1	5
मकर	0	1	1	1	1	1	0	0	5
कुंभ	1	0	0	0	0	0	0	1	2
मीन	1	1	0	1	1	0	1	1	6



अभिप्राय

संतान

सम्मान

धार्मिक कर्म

सीखना

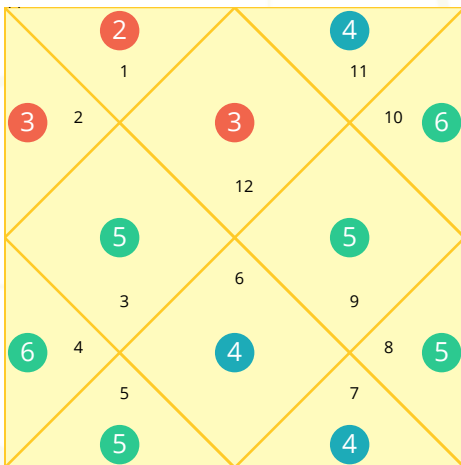
भाग्य

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

शुक्र भित्ताष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	0	0	0	1	0	1	2
वृषभ	0	1	0	1	0	1	0	0	3
मिथुन	0	1	1	0	0	1	1	1	5
कर्क	0	1	0	1	1	1	1	1	6
सिंह	0	1	1	1	0	0	1	1	5
कन्या	1	1	1	0	0	0	0	1	4
तुला	0	1	0	0	1	1	0	1	4
वृश्चिक	0	1	0	1	1	1	1	0	5
धनु	1	0	1	0	1	1	1	0	5
मकर	1	0	0	1	1	1	1	1	6
कुंभ	0	1	1	0	0	0	1	1	4
मीन	0	1	1	0	0	1	0	0	3



अभिप्राय

पति या पत्नी

विवाह

वाहन

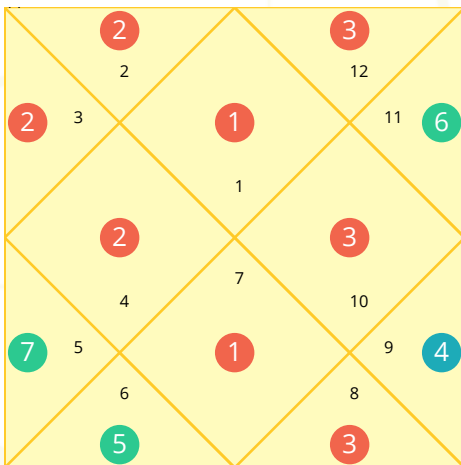
आभूषण

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	0	0	0	0	0	1	1
वृषभ	1	1	0	0	0	0	0	0	2
मिथुन	0	0	0	0	0	0	1	1	2
कर्क	0	0	1	0	1	0	0	0	2
सिंह	1	0	1	1	1	1	1	1	7
कन्या	1	1	1	0	0	0	1	1	5
तुला	0	0	0	1	0	0	0	0	1
वृश्चिक	1	0	0	1	0	0	0	1	3
धनु	1	1	1	1	0	0	0	0	4
मकर	0	0	0	1	1	1	0	0	3
कुंभ	1	0	1	1	1	1	1	0	6
मीन	1	0	1	0	0	0	0	1	3



अभिप्राय

कर्मचारी

जीविका

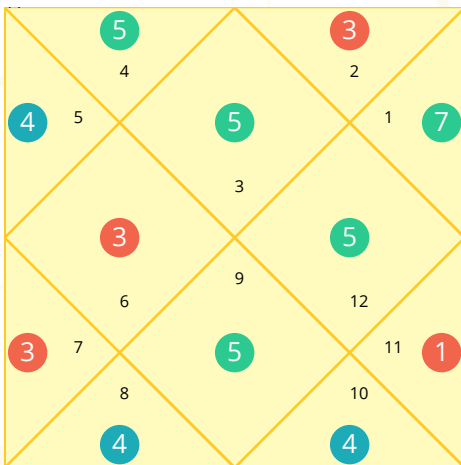
कष्ट व शोक

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	0	1	1	1	1	1	7
वृषभ	1	1	0	0	0	1	0	0	3
मिथुन	0	1	0	1	1	1	1	0	5
कर्क	1	0	1	0	1	1	1	0	5
सिंह	0	0	1	1	1	0	0	1	4
कन्या	0	1	0	0	1	0	1	0	3
तुला	0	0	1	1	0	1	0	0	3
वृश्चिक	1	0	0	0	1	1	0	1	4
धनु	1	1	1	1	1	0	0	0	5
मकर	1	0	0	1	1	0	1	0	4
कुंभ	0	0	0	0	0	0	1	0	1
मीन	0	0	1	1	1	1	0	1	5



सूचक

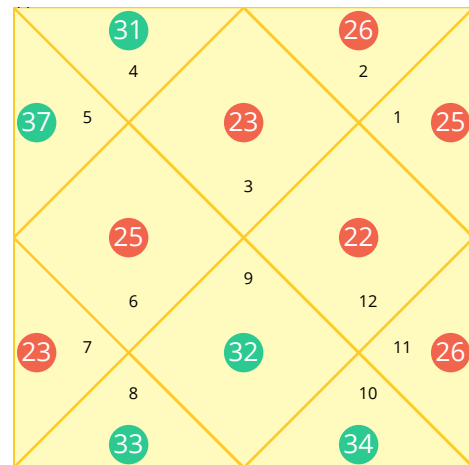
- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

सर्वाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	4	3	4	5	6	2	1	0	25
वृषभ	6	3	3	5	4	3	2	0	26
मिथुन	1	5	2	4	4	5	2	0	23
कर्क	4	5	4	6	4	6	2	0	31
सिंह	6	4	5	4	6	5	7	0	37
कन्या	4	6	1	1	4	4	5	0	25
तुला	3	2	3	6	4	4	1	0	23
वृश्चिक	6	4	4	5	6	5	3	0	33
धनु	4	6	4	4	5	5	4	0	32
मकर	4	4	5	7	5	6	3	0	34
कुंभ	4	3	3	4	2	4	6	0	26
मीन	2	4	1	3	6	3	3	0	22

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित



विम्शोत्तरी दशा - ।

बुध

22-09-1992 09:19
22-09-2009 15:19

केतु

22-09-2009 15:19
22-09-2016 09:19

शुक्र

22-09-2016 09:19
22-09-2036 09:19

बुध	19-02-1995 00:46
केतु	16-02-1996 05:43
शुक्र	17-12-1998 02:43
सूर्य	23-10-1999 13:49
चन्द्र	24-03-2001 00:19
मंगल	21-03-2002 05:16
राहु	07-10-2004 14:34
गुरु	13-01-2007 12:10
शनि	22-09-2009 15:19

केतु	18-02-2010 18:46
शुक्र	20-04-2011 21:46
सूर्य	26-08-2011 17:52
चन्द्र	26-03-2012 19:22
मंगल	22-08-2012 22:49
राहु	10-09-2013 11:07
गुरु	17-08-2014 08:43
शनि	26-09-2015 04:22
बुध	22-09-2016 09:19

शुक्र	22-01-2020 21:19
सूर्य	22-01-2021 03:19
चन्द्र	22-09-2022 21:19
मंगल	23-11-2023 00:19
राहु	22-11-2026 18:19
गुरु	23-07-2029 18:19
शनि	22-09-2032 09:19
बुध	24-07-2035 06:19
केतु	22-09-2036 09:19

सूर्य

22-09-2036 09:19
22-09-2042 21:19

चन्द्र

22-09-2042 21:19
22-09-2052 09:19

मंगल

22-09-2052 09:19
23-09-2059 03:19

सूर्य	09-01-2037 23:07
चन्द्र	11-07-2037 14:07
मंगल	16-11-2037 10:13
राहु	11-10-2038 03:37
गुरु	30-07-2039 08:25
शनि	11-07-2040 08:07
बुध	17-05-2041 19:13
केतु	22-09-2041 15:19
शुक्र	22-09-2042 21:19

चन्द्र	24-07-2043 06:19
मंगल	22-02-2044 07:49
राहु	23-08-2045 04:49
गुरु	23-12-2046 04:49
शनि	23-07-2048 12:19
बुध	22-12-2049 22:49
केतु	24-07-2050 00:19
शुक्र	23-03-2052 18:19
सूर्य	22-09-2052 09:19

मंगल	18-02-2053 12:46
राहु	09-03-2054 01:04
गुरु	12-02-2055 22:40
शनि	23-03-2056 18:19
बुध	20-03-2057 23:16
केतु	17-08-2057 02:43
शुक्र	17-10-2058 05:43
सूर्य	22-02-2059 01:49
चन्द्र	23-09-2059 03:19

विम्शोत्तरी दशा - ॥

राहु

23-09-2059 03:19
22-09-2077 15:19

गुरु

22-09-2077 15:19
22-09-2093 15:19

शनि

22-09-2093 15:19
23-09-2112 09:19

राहु 05-06-2062 07:31
गुरु 28-10-2064 21:55
शनि 04-09-2067 21:01
बुध 24-03-2070 06:19
केतु 11-04-2071 18:37
शुक्र 11-04-2074 12:37
सूर्य 06-03-2075 06:01
चन्द्र 04-09-2076 03:01
मंगल 22-09-2077 15:19

गुरु 10-11-2079 20:07
शनि 24-05-2082 03:19
बुध 29-08-2084 00:55
केतु 04-08-2085 22:31
शुक्र 04-04-2088 22:31
सूर्य 22-01-2089 03:19
चन्द्र 24-05-2090 03:19
मंगल 30-04-2091 00:55
राहु 22-09-2093 15:19

शनि 25-09-2096 10:22
बुध 05-06-2099 13:31
केतु 15-07-2100 09:10
शुक्र 15-09-2103 00:10
सूर्य 26-08-2104 23:52
चन्द्र 28-03-2106 07:22
मंगल 07-05-2107 03:01
राहु 13-03-2110 02:07
गुरु 23-09-2112 09:19

वर्तमान दशा



दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पत्ति तिथि
महादशा	शुक्र	22-09-2016 09:19	22-09-2036 09:19
अंतर्दशा	राहु	23-11-2023 00:19	22-11-2026 18:19
प्रत्यंतर दशा	केतु	23-08-2025 04:49	26-10-2025 02:52
सूक्ष्म दशा	मंगल	15-09-2025 02:31	18-09-2025 20:01

* ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।

भ्रामरी (4 वर्ष)

24-8-1997 0:30
24-8-2001 0:30

भद्रिका (5 वर्ष)

24-8-2001 0:30
24-8-2006 0:30

उल्का (6 वर्ष)

24-8-2006 0:30
24-8-2012 0:30

भ्रामरी	2-2-1998 8:30
भद्रिका	24-8-1998 6:30
उल्का	24-4-1999 18:30
सिद्धि	2-2-2000 20:30
संकटा	23-12-2000 12:30
मंगला	2-2-2001 2:30
पिंगला	24-4-2001 6:30
धान्य	24-8-2001 0:30

भद्रिका	4-5-2002 16:0
उल्का	5-3-2003 1:0
सिद्धि	23-2-2004 3:30
संकटा	3-4-2005 23:30
मंगला	24-5-2005 17:0
पिंगला	3-9-2005 4:0
धान्य	2-2-2006 8:30
भ्रामरी	24-8-2006 0:30

उल्का	24-8-2007 6:30
सिद्धि	23-10-2008 9:30
संकटा	22-2-2010 9:30
मंगला	24-4-2010 6:30
पिंगला	24-8-2010 0:30
धान्य	22-2-2011 15:30
भ्रामरी	24-10-2011 3:30
भद्रिका	24-8-2012 0:30

सिद्धि (7 वर्ष)

24-8-2012 0:30
24-8-2019 0:30

संकटा (8 वर्ष)

24-8-2019 0:30
24-8-2027 0:30

मंगला (1 वर्ष)

24-8-2027 0:30
24-8-2028 0:30

सिद्धि	3-1-2014 4:0
संकटा	25-7-2015 8:0
मंगला	4-10-2015 8:30
पिंगला	23-2-2016 9:30
धान्य	23-9-2016 11:0
भ्रामरी	4-7-2017 13:0
भद्रिका	24-6-2018 15:30
उल्का	24-8-2019 0:30

संकटा	3-6-2021 8:30
मंगला	23-8-2021 12:30
पिंगला	1-2-2022 20:30
धान्य	3-10-2022 8:30
भ्रामरी	24-8-2023 0:30
भद्रिका	2-10-2024 20:30
उल्का	1-2-2026 20:30
सिद्धि	24-8-2027 0:30

मंगला	3-9-2027 4:0
पिंगला	23-9-2027 11:0
धान्य	23-10-2027 21:30
भ्रामरी	3-12-2027 11:30
भद्रिका	23-1-2028 5:0
उल्का	24-3-2028 2:0
सिद्धि	3-6-2028 2:30
संकटा	24-8-2028 0:30

पिंगला (2 वर्ष)

24-8-2028 0:30
24-8-2030 0:30

धान्य (3 वर्ष)

24-8-2030 0:30
24-8-2033 0:30

भ्रामरी (4 वर्ष)

24-8-2033 0:30
24-8-2037 0:30

पिंगला 3-10-2028 14:30

धान्य 3-12-2028 11:30

भ्रामरी 22-2-2029 15:30

भद्रिका 4-6-2029 2:30

उल्का 3-10-2029 20:30

सिद्धि 22-2-2030 21:30

संकटा 4-8-2030 5:30

मंगला 24-8-2030 0:30

धान्य 23-11-2030 8:0

भ्रामरी 25-3-2031 2:0

भद्रिका 24-8-2031 6:30

उल्का 22-2-2032 21:30

सिद्धि 22-9-2032 23:0

संकटा 24-5-2033 11:0

मंगला 23-6-2033 21:30

पिंगला 24-8-2033 0:30

भ्रामरी 2-2-2034 8:30

भद्रिका 24-8-2034 6:30

उल्का 24-4-2035 18:30

सिद्धि 2-2-2036 20:30

संकटा 23-12-2036 12:30

मंगला 2-2-2037 2:30

पिंगला 24-4-2037 6:30

धान्य 24-8-2037 0:30

भद्रिका (5 वर्ष)

24-8-2037 0:30
24-8-2042 0:30

उल्का (6 वर्ष)

24-8-2042 0:30
24-8-2048 0:30

सिद्धि (7 वर्ष)

24-8-2048 0:30
24-8-2055 0:30

भद्रिका 4-5-2038 16:0

उल्का 5-3-2039 1:0

सिद्धि 23-2-2040 3:30

संकटा 3-4-2041 23:30

मंगला 24-5-2041 17:0

पिंगला 3-9-2041 4:0

धान्य 2-2-2042 8:30

भ्रामरी 24-8-2042 0:30

उल्का 24-8-2043 6:30

सिद्धि 23-10-2044 9:30

संकटा 22-2-2046 9:30

मंगला 24-4-2046 6:30

पिंगला 24-8-2046 0:30

धान्य 22-2-2047 15:30

भ्रामरी 24-10-2047 3:30

भद्रिका 24-8-2048 0:30

सिद्धि 3-1-2050 4:0

संकटा 25-7-2051 8:0

मंगला 4-10-2051 8:30

पिंगला 23-2-2052 9:30

धान्य 23-9-2052 11:0

भ्रामरी 4-7-2053 13:0

भद्रिका 24-6-2054 15:30

उल्का 24-8-2055 0:30

संकटा (8 वर्ष)

24-8-2055 0:30
24-8-2063 0:30

मंगला (1 वर्ष)

24-8-2063 0:30
24-8-2064 0:30

पिंगला (2 वर्ष)

24-8-2064 0:30
24-8-2066 0:30

संकटा	3-6-2057 8:30
मंगला	23-8-2057 12:30
पिंगला	1-2-2058 20:30
धान्य	3-10-2058 8:30
भ्रामरी	24-8-2059 0:30
भद्रिका	2-10-2060 20:30
उल्का	1-2-2062 20:30
सिद्धि	24-8-2063 0:30

मंगला	3-9-2063 4:0
पिंगला	23-9-2063 11:0
धान्य	23-10-2063 21:30
भ्रामरी	3-12-2063 11:30
भद्रिका	23-1-2064 5:0
उल्का	24-3-2064 2:0
सिद्धि	3-6-2064 2:30
संकटा	24-8-2064 0:30

पिंगला	3-10-2064 14:30
धान्य	3-12-2064 11:30
भ्रामरी	22-2-2065 15:30
भद्रिका	4-6-2065 2:30
उल्का	3-10-2065 20:30
सिद्धि	22-2-2066 21:30
संकटा	4-8-2066 5:30
मंगला	24-8-2066 0:30

धान्य (3 वर्ष)

24-8-2066 0:30
24-8-2069 0:30

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

धान्य	23-11-2066 8:0
भ्रामरी	25-3-2067 2:0
भद्रिका	24-8-2067 6:30
उल्का	22-2-2068 21:30
सिद्धि	22-9-2068 23:0
संकटा	24-5-2069 11:0
मंगला	23-6-2069 21:30
पिंगला	24-8-2069 0:30

मिथुन (9 वर्ष)

28-2-1999
28-2-2008

वृष (10 वर्ष)

28-2-2008
28-2-2018

मेष (6 वर्ष)

28-2-2018
28-2-2024

वृष 28-11-1999

मेष 28-8-2000

मीन 28-5-2001

कुम्भ 28-2-2002

मकर 28-11-2002

धनु 28-8-2003

वृश्चिक 28-5-2004

तुला 28-2-2005

कन्या 28-11-2005

सिंह 28-8-2006

कर्क 28-5-2007

मिथुन 28-2-2008

मेष 28-12-2008

मीन 28-10-2009

कुम्भ 28-8-2010

मकर 28-6-2011

धनु 28-4-2012

वृश्चिक 28-2-2013

तुला 28-12-2013

कन्या 28-10-2014

सिंह 28-8-2015

कर्क 28-6-2016

मिथुन 28-4-2017

वृष 28-2-2018

वृष 28-8-2018

मिथुन 28-2-2019

कर्क 28-8-2019

सिंह 28-2-2020

कन्या 28-8-2020

तुला 28-2-2021

वृश्चिक 28-8-2021

धनु 28-2-2022

मकर 28-8-2022

कुम्भ 28-2-2023

मीन 28-8-2023

मेष 28-2-2024

मीन (12 वर्ष)

28-2-2024
28-2-2036

कुम्भ (7 वर्ष)

28-2-2036
28-2-2043

मकर (9 वर्ष)

28-2-2043
28-2-2052

मेष 28-2-2025

वृष 28-2-2026

मिथुन 28-2-2027

कर्क 28-2-2028

सिंह 28-2-2029

कन्या 28-2-2030

तुला 28-2-2031

मीन 28-9-2036

मेष 28-4-2037

वृष 28-11-2037

मिथुन 28-6-2038

कर्क 28-1-2039

सिंह 28-8-2039

कन्या 28-3-2040

धनु 28-11-2043

वृश्चिक 28-8-2044

तुला 28-5-2045

कन्या 28-2-2046

सिंह 28-11-2046

कर्क 28-8-2047

मिथुन 28-5-2048

वृश्चिक	28-2-2032
धनु	28-2-2033
मकर	28-2-2034
कुम्भ	28-2-2035
मीन	28-2-2036

तुला	28-10-2040
वृश्चिक	28-5-2041
धनु	28-12-2041
मकर	28-7-2042
कुम्भ	28-2-2043

वृष	28-2-2049
मेष	28-11-2049
मीन	28-8-2050
कुम्भ	28-5-2051
मकर	28-2-2052

धनु (3 वर्ष)

28-2-2052
28-2-2055

वृश्चिक (2 वर्ष)

28-2-2055
28-2-2057

तुला (5 वर्ष)

28-2-2057
28-2-2062

वृश्चिक	28-5-2052
तुला	28-8-2052
कन्या	28-11-2052
सिंह	28-2-2053
कर्क	28-5-2053
मिथुन	28-8-2053
वृष	28-11-2053
मेष	28-2-2054
मीन	28-5-2054
कुम्भ	28-8-2054
मकर	28-11-2054
धनु	28-2-2055

तुला	28-4-2055
कन्या	28-6-2055
सिंह	28-8-2055
कर्क	28-10-2055
मिथुन	28-12-2055
वृष	28-2-2056
मेष	28-4-2056
मीन	28-6-2056
कुम्भ	28-8-2056
मकर	28-10-2056
धनु	28-12-2056
वृश्चिक	28-2-2057

वृश्चिक	28-7-2057
धनु	28-12-2057
मकर	28-5-2058
कुम्भ	28-10-2058
मीन	28-3-2059
मेष	28-8-2059
वृष	28-1-2060
मिथुन	28-6-2060
कर्क	28-11-2060
सिंह	28-4-2061
कन्या	28-9-2061
तुला	28-2-2062

कन्या (6 वर्ष)

28-2-2062
28-2-2068

सिंह (6 वर्ष)

28-2-2068
28-2-2074

कर्क (12 वर्ष)

28-2-2074
28-2-2086

तुला	28-8-2062
वृश्चिक	28-2-2063
धनु	28-8-2063
मकर	28-2-2064

कन्या	28-8-2068
तुला	28-2-2069
वृश्चिक	28-8-2069
धनु	28-2-2070

मिथुन	28-2-2075
वृष	28-2-2076
मेष	28-2-2077
मीन	28-2-2078

कुम्भ	28-8-2064
मीन	28-2-2065
मेष	28-8-2065
वृष	28-2-2066
मिथुन	28-8-2066
कर्क	28-2-2067
सिंह	28-8-2067
कन्या	28-2-2068

मकर	28-8-2070
कुम्भ	28-2-2071
मीन	28-8-2071
मेष	28-2-2072
वृष	28-8-2072
मिथुन	28-2-2073
कर्क	28-8-2073
सिंह	28-2-2074

कुम्भ	28-2-2079
मकर	28-2-2080
धनु	28-2-2081
वृश्चिक	28-2-2082
तुला	28-2-2083
कन्या	28-2-2084
सिंह	28-2-2085
कर्क	28-2-2086

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**



जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योंकि कुंडली के एक भाग में राहु और दूसरे भाग में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाग में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहाँ बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन

सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में खराब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त

कुलिक

वासुकी

शंखपाल

पद्म

महापद्म

तक्षक

कर्कोटक

शंखचूड़

घातक

विषधर

शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष



कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष उदित रूप में विद्यमान है।
आपको कुंडली में कालसर्प दोष आंशिक रूप से विद्यमान है।

कालसर्प नाम

कुलिक

दिशा

आंशिक उदि

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में कुलिक नामक कालसर्प योग बन रहा है।

जातक को अपयश का भी भागी बनना पड़ता है। इस योग की वजह से जातक की पढ़ाई-लिखाई सामान्य गति से चलती है और उसका वैवाहिक जीवन भी सामान्य रहता है। परंतु आर्थिक परेशानियों की वजह से उसके वैवाहिक जीवन में भी जहर घुल जाता है। मित्रों द्वारा धोखा, संतान सुख में बाधा और व्यवसाय में संघर्ष कभी उसका पीछा नहीं छोड़ते। जातक का स्वभाव भी विकृत हो जाता है। मानसिक असंतुलन और शारीरिक व्याधियां झेलते-झेलते वह समय से पहले ही बूढ़ा हो जाता है। उसके उत्साह व पराक्रम में निरंतर गिरावट आती जाती है। उसका कठिन परिश्रमी स्वभाव उसे सफलता के शिखर पर भी पहुंचा देता है। परंतु इस फल को वह पूर्णतयः सुखपूर्वक भोग नहीं पाता है।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।
- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें।
- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।
- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें।
- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंतर्दशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।
- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।
- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।
- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।
- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नमः शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।



मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं।

अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम

भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते हैं। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वांश को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत

17.75%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है। कुछ साधारण उपायों की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।



भाव के आधार पर

राहु आपके कुंडली में द्वितीय भाव में है।

पंचम भाव में मंगल अवस्थित है।

केतु आपके कुंडली में अष्टम भाव में है।



दृष्टि के आधार पर

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव केतु से दृष्ट है।

केतु की दृष्टि आपके कुंडली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

शनि, आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को शनि देख रहा है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को मंगल देख रहा है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को केतु देख रहा है।

मंगल, आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

शनि, आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

राहु, आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है।
- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है।
- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं।
- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है।
- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है।
- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुःप्रभाव में लाभ मिलता है।
- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें।
- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें।



पितृ दोष क्या होता है ?

पितृ दोष पूर्वजों की एक कार्मिक ऋण है और ग्रहों के संयोजन के रूप में जन्म कुंडली में परिलक्षित होता है। यह पूर्वजों की उपेक्षा के कारण भी होता है और श्राद्ध या दान या आध्यात्मिक उत्थान का यथोचित प्रबंध न करने के कारण भी पितृ दोष हो सकता है।

पितृ दोष विश्लेषण

क्या पितृ दोष आपकी कुंडली में उपस्थित है ?

हाँ

आपकी जन्मपत्रिका में पितृ दोष उपस्थित है क्योंकि इससे सम्बंधित 1 नियमों का संयोजन आपकी कुंडली में हो रहा है। पितृ दोष का शमन इसके उपायों को करके किया जा सकता है अतः चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

नियम जिनके द्वारा आपकी कुंडली में पितृ दोष की उपस्थिति

- चन्द्र व राहु और/ या राहु एवं शनि की युति से भी पितृ दोष होता है।

पितृ दोष के प्रभाव

- पितृ दोष के प्रभाव निम्नलिखित हैं -

- पितृ दोष से परिवार में प्रतिकूल वातावरण पैदा होती है।

- यह शादी में देरी होने और असफल विवाह में भी कारण होती है।

- पितृ दोष भी परिवार में दुर्घटनाओं या अवांछित घटनाओं का कारण बन सकता है।

- इसके साथ शिक्षा के क्षेत्र में देरी या अवरोधों को पैदा कर सकता है या आपको कभी न खत्म होने वाला कर्ज जैसी परिस्थिति में पहुंचा सकता है।

- विरासत में मिला रोग और लम्बी बीमारी पितृ दोष के बुरे प्रभावों में से एक है।

- पितृ दोष शांत करने के उपाय निम्नलिखित है -
- अपने माता -पिता , भाई-बहन की हरसंभव सेवा करे।
- पीपल और बरगद के वृक्ष की पूजा करने से पितृ दोष की शान्ति होती है या पीपल का पेड़ किसी नदी के किनारे लगायें और पूजा करें, इसके साथ ही सोमवती अमावस्या को दूध की खीर बना, पितरों को अर्पित करने से भी इस दोष में कमी होती है या फिर प्रत्येक अमावस्या को एक ब्राह्मण को भोजन कराने व दक्षिणा वस्त्र भेंट करने से पितृ दोष कम होता है
- प्रत्येक अमावस्या को कंडे की धूनी लगाकर उसमें खीर का भोग लगाकर दक्षिण दिशा में पितरों का आवाहन करने व उनसे अपने कर्मों के लिये क्षमायाचना करने से भी लाभ मिलता है
- पितृ दोष निवारण हेतु पितृ पक्ष में त्रिपिंडी श्राद्ध करें।
- ॐ नवकुल नागाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्प प्रचोदयात् – "की एक रुद्राक्ष माला जप प्रतिदिन करें।
- घर एवं कार्यालय, दुकान पर मोर पंख लगावें।
- शनि के दिन ताजी मूली का दान करें। कोयले, बहते जल में प्रवाहित करें।
- सोमवती अमावस्या के दिन पितृ दोष निवारण पूजा करने से भी पितृ दोष में लाभ मिलाता है
- सूर्योदय के समय किसी आसन पर खड़े होकर सूर्य को निहारने, उससे शक्ति देने की प्रार्थना करने और गायत्री मंत्र का जाप करने से भी सूर्य मजबूत होता है
- भगवान शंकर की प्रतिदिन पूजा एवं आराधना करने से भी पितृ दोष की शांति होती है।



साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है।

सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छः मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं है। इसमें कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी,

अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है



साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिन

17-9-2025

शनि राशि

मीन

चंद्र राशि

कर्क

वक्री शनि

हाँ

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	23-7-2002	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	मिथुन	हाँ	उदय समाप्त	8-1-2003	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	8-4-2003	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	6-9-2004	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	कर्क	हाँ	उदय प्रारम्भ	13-1-2005	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	26-5-2005	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	1-11-2006	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	सिंह	हाँ	शिखर प्रारम्भ	10-1-2007	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	16-7-2007	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	10-9-2009	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	13-7-2034	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	27-8-2036	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	22-10-2038	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	हाँ	अस्त प्रारम्भ	5-4-2039	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	13-7-2039	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	11-7-2061	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	मिथुन	हाँ	उदय समाप्त	13-2-2062	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	7-3-2062	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	24-8-2063	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	कर्क	हाँ	उदय प्रारम्भ	5-2-2064	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर	9-5-2064	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्र शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
			प्रारम्भ		का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	13-10-2065	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	सिंह	हाँ	शिखर प्रारम्भ	3-2-2066	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	3-7-2066	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	30-8-2068	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	19-9-2090	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	मिथुन	हाँ	उदय समाप्त	25-10-2090	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	21-5-2091	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	2-7-2093	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	18-8-2095	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	11-10-2097	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	हाँ	अस्त प्रारम्भ	2-5-2098	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	20-6-2098	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।

साढ़े सती उपाय

- साढ़ेसाती के अनिष्ट प्रभावों को काम करने के उपाय निम्नलिखित हैं -
- साढ़े साती की परेशानी से बचने के लिए नियमित हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।
- इस ग्रह दशा से बचने के लिए काले घोड़े की नाल की अंगूठी बनाकर उसे दाएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।
- शनि देव को शनिवार के दिन सरसों का तेल और तांबा भेंट करना चाहिए।
- किसी गरीब व्यक्ति को काले कंबल का दान करें।
- शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करें और जल चढ़ाएं।
- हर मंगलवार और शनिवार ॐ रामदूताय नमः मंत्र का जप करें। मंत्र जप की संख्या कम से कम 108 करे।
- धार्मिक आचरण बनाए रखें और किसी का अनादर न करें।
- हर शनिवार को शनि के निमित्त तेल का दान करें। तेल दान करने से पहले तेल में अपना चेहरा देख लेना चाहिए। यह उपाय हर शनिवार किया जाना चाहिए।
- शनि बीज मंत्र - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः प्रतिदिन 108 बार अवश्य करें
- शनि प्रकोप से मुक्ति के लिए सुंदर काण्ड का नियमित पाठ अवश्य करें।
- रोटी में तेल लगाकर कुत्ते या कौए को खिलाएं।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं। प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है। रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं। ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है।

जीवन रत्न



पन्ना

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है। इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात् लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है। इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए।

कारक रत्न



हीरा

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात् पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है। इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं। पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न



नीलम

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है। यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है। यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है। नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं। इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है।

जीवन रत्न - पन्ना



विकल्प	हरा गोमेद
उंगली	कनिष्ठा
भार	4 - 6.25 कैरेट

दिन	बुधवार
अधिदेवता	बुद्ध
धातु	स्वर्ण



विवरण

पन्ना का स्वामी ग्रह बुध है। पन्ना धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, बलवान शरीर, धन, संपत्ति और अच्छी नेत्र दृष्टि की प्राप्ति होती है। यह दुष्ट आत्माओं, सर्प दंश और बुरी नज़र से कुप्रभावों से बचाता है। पन्ना मिर्गी एवं पागलपन के इलाज और बुरे स्वप्नों से संरक्षण में भी सहायक है।



भार व धातु

पन्ना का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए। इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।



पहनने का समय

पन्ना रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी बुधवार को सूर्योदय के दो घंटे बाद धारण किया जा सकता है।



उंगली

मंत्र जाप के बाद, पन्ना की अंगूठी को दाहिने हाथ की कनिष्ठा अर्थात छोटी उंगली में धारण करें।



विकल्प

पन्ना के स्थान पर अक्वामरीन (हरित नील), पेरिडोट, हरा जिंक्रोन, ग्रीन एगेट या हरा जेड(हरिताश्म) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।



मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। पन्ना धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ अं ब्रां ब्रौं सः बुधाय नमः



प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।



सावधानी

ध्यान रहें कि पन्ना को लाल मूंगा, मोती, पुखराज और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न - हीरा



विकल्प	ओपल / जिरकॉन
उंगली	कनिष्ठा
भार	1 - 4.25 कैरेट

दिन	शुक्रवार
अधिदेवता	शुक्र
धातु	चांदी



विवरण

हीरा रत्न का स्वामी ग्रह शुक्र है। हीरा धारण करने से धैर्य, सफलता, धन, समृद्धि, निर्मलता की प्राप्ति होती है। हीरा धारण करने वाला व्यक्ति निडर, बुद्धिमान और शिष्ट होता है। हीरा पहनने से धारक धार्मिक शास्त्रों में प्रवीण बनाता है। यह रत्न बुरी आत्माओं के हानिकारक प्रभावों और साँप के दंश से भी संरक्षण करता है।



पहनने का समय

हीरा को शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है।



उंगली

मंत्र जाप के बाद, हीरा को दाहिने हाथ की छोटी उंगली अर्थात् कनिष्ठा में धारण किया जा सकता है।



भार व धातु

वजन में १-१/२ कैरेट का दोषरहित हीरा पहनना चाहिए। इसे प्लटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।



मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। हीरा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः



विकल्प

हीरा के स्थान पर सफेद नीलम, सफेद जिक्रोन और सफेद तूरमली आदि विकल्प रत्नों को भी धारण किया जा सकता है।



सावधानी

हीरा को माणिक, मोती, लाल मूंगा और पुखराज के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।



प्राण प्रतिष्ठा

हीरे की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।

भाग्य रत्न - नीलम



विकल्प	नीली
अंगुली	मध्यमिका
भार	3 - 4.25 कैरेट

दिन	शनिवार
अधिदेवता	शनि
धातु	चांदी



विवरण

नीलम रत्न का स्वामी ग्रह शनि है। नीलम धारण करने से स्वास्थ्य, धन, दीर्घायु, सुख, समृद्धि, नाम और यश की प्राप्ति होती है।



पहनने का समय

नीलम रत्न को किसी भी शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले धारण किया जा सकता है।



अंगुली

मंत्र जाप के बाद, नीलम को मध्यमा अर्थात बीच की अंगुली में धारण किया जा सकता है।



भार व धातु

वजन में कम से कम ५ कैरेट का दोषरहित नीलम पहनना चाहिए। इसे स्टील या अष्ट धातु से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।



मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। नीलम धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ प्रां प्रीं प्रीं सः शनैश्चराय नमः



विकल्प

नीलम के स्थान पर नीला जिक्रोन, जामुनिया, नीली तूरमुली, लाजावर्द, ब्लू स्पिनल और नीली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।



प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।



सावधानी

ध्यान रहें कि नीलम को माणिक, मोती, लाल मूंगा और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।



आठ मुखी रुद्राक्ष

आपको आठ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की सलाह दी जाती है।

यह धारक को सभी प्रकार की योग्यता प्रदान करता है – रिद्धियाँ तथा सिद्धियाँ तथा उसे शिवलोक की ओर ले जाता है। उसके विरोधियों का नाश हो जाता है अर्थात् उसके विरोधियों की मानसिक स्थिति बदल जाती है। यह माना जाता है कि, आठ मुखी रुद्राक्ष लोगों को आठों दिशाओं से ख्याति प्राप्त करने में मदद करता है। आठ मुखी रुद्राक्ष का प्रभाव ऐसे होता है कि यह पहननेवाले को दुर्घटना से बचाता है और दुश्मन के खिलाफ लड़ाई जीतने में हमेशा मदद करता है। यह मणि राहू के दोषयुक्त प्रभाव का असर ख़तम करता है। आत्माओं के क्लेश, बुरे सपने दिखानेवाले आघात, त्वचा रोग, तनाव और चिंता जैसे रोगों में भी यह काफी मददगार साबित होता है।

शुभाशुभ अंक

4

भाग्यांक

1

मूलांक

2

नामांक

आपका नाम Shashikant Maurya

जन्म दिनांक 28-2-1999

मूलांक 1

मूलांक स्वामी सूर्य

मित्र अंक 9

सम अंक 2

शत्रु अंक 6

शुभ दिन रविवार, सोमवार

शुभ रत्न माणिक

शुभ उपरत्न रक्तेतमणि, लाल तुरमली

शुभ देवता सूर्य

शुभ धातु तांबा

शुभ रंग लाल

शुभ मंत्र || ओम ह्रीं सूर्याय नमः ||

आपके बारे में

आपका मूलांक एक है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा के व्यक्ति होंगे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगे उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगे। इच्छाशक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा। लंबे समय तक जो भी विचार बना लेंगे उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगे। आपके प्रेम स्थायी बने रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा। मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगे। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी की आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप आपको मंजूर नहीं होगा।

शुभ व्रत समय

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें। भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगन्धित अगरबत्ती जला कर ' आदित्य हृदय स्तोत्र ' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवार को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

शुभ देवता



आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल, जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ित स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

शुभ गायत्री मंत्र



आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। गायत्री मंत्र : || आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः प्रचोदयात्त ||

शुभ ध्यान समय



प्रातः काल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।
|| जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमो?रिं सर्वपापघ्नं प्रणतो?स्मि दिवाकरम् ||

शुभ मंत्र



अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे। ||

ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः॥ जप संख्या 6000

आपके के लिए शुभ समय



पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितम्बर तक गोचर में सूर्य, मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गए कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

शुभ वास्तु



आपके लिए ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, काम्प्लेक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुश खुशहाली बढ़ेगी।

लग्न फल - मिथुन



स्वामी	बुध
प्रतीक	युगल
विशेषताएँ	वायु तत्त्व, द्विस्वभाव, पश्चिम
भाग्यशाली रत्न	नीलम
व्रत का दिन	पूर्णिमा

**देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् ।
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत् ॥**

मिथुन लग्न के व्यक्ति मित्रवत, अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाने में कुशल, मिलनसार, अस्थिरचित्त, अनिश्चित, एक समय पर एक साथ दो या अधिक कार्यों में रुचि लेने वाले, हाज़िर जवाब, बुद्धिमान, मानसिक रूप से अधिक सक्रिय, अति-भावुक, थोड़े तुनकमिज़ाज अशांत या घबरा जाने वाले, वाचाल, अगंभीर और हमेशा कुछ अलग करने के लिए तैयार रहने वाले होते हैं।

मिथुन लग्न दो जुड़वाँ बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है, इसलिए आपके व्यक्तित्व के भी दो अलग अलग पक्ष हो सकते हैं। आप जो पहले से ही जानते हैं और उससे अधिक सीखने के लिए आपको यह बात लोगों तक पहुँचाने की प्रबल आवश्यकता है।

“ आप पढ़ने और यात्रा करने में आनंद लेते हैं और इन दोनों कार्यों में नवीनतम ज्ञान प्राप्ति की ढेरों संभावनाएं हैं। आपको विविधता पसंद है और ऐसा हो सकता है कि आप सभी कार्यों में थोड़े थोड़े निपुण हों लेकिन किसी भी कार्य में पूर्णतः प्रवीण ना हों।

आपका रुझान विस्तृत रूप से बातों के विस्तार में होगा लेकिन आप उनकी गहराई में जाने का प्रयत्न नहीं करेंगे। आप उपर से आत्मविश्वासपूर्ण दिखाई दे सकते हैं, लेकिन आप में आत्मविश्वास और आंतरिक स्थिरता की कमी हो

सकती है ।

आप को बोलना अच्छा लगता है ,अपने मुँह से और साथ ही हाथों के इस्तेमाल से ।

“ मिथुन लग्न का स्वामी है बुध, इसलिए बुध आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण होगा ।



सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक



नियंत्रण: (सीखना और ऊर्जा बर्बाद करने की अपेक्षा उसकी प्राथमिकता को जानें)

सकारात्मक लक्षण



प्रज्ञात्मक

योजनाकार

बहुमुखी अनुकूलनीय

तार्किक

नकारात्मक लक्षण



ढुलमुल मन

अधीर

गपशप करना

तिकड़मबाज

आपकी कुंडली में
ग्रहों का विश्लेषण





ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्रोत है। सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊर्जा, शक्ति, पिता, सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शक्ति का कारक कहा जाता है।



आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि कुम्भ	अंश 15:25:17	नक्षत्र शतभिसा - 3
स्वामी तिसरा भाव	भाव में नौवां भाव	अस्त/अवस्था नहीं / युवा

सूर्य आपकी कुंडली में हानिप्रद है



आपके जन्मपत्रिका में सूर्य नौवां भाव में एवं कुम्भ राशि में स्थित है।

आप उच्च आदर्शवाले, सहनशील, साहसी और जिज्ञासु व्यक्ति हैं। आप एक सदाचारी और तपस्वी प्रवृत्ति के मनुष्य हैं। आप का स्वभाव सीधा और स्पष्ट है और आप दिखावे के भीतर छिपी सच्चाई की तह तक पहुँचने की क्षमता रखते हैं। आप के उद्देश्य बुलंद और महान हैं, लेकिन व्यावहारिकता में कमी हो सकती है। आध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों में गहरी रुचि है। कानून, धर्म और दर्शन स्वाभाविक अभिरुचि के विषय हैं। आपका अंतरमन अत्यधिक विकसित है

“ आप सत्य और न्याय के प्रेमी हैं

आपका दिमाग तेज है और आप अपने जीवन के लक्ष्यों के विषय में स्पष्ट हैं। आप में अपने आसपास की दुनिया को समझने की गहरी अभिलाषा है। जीवन और जीवन की घटनाओं के अर्थ को खोजने की तीव्र इच्छा है। आप में विभिन्न संस्कृतियों और दृष्टिकोण को प्रत्यक्ष रूप से समझने और जानने की व विश्वभर में भ्रमण करने की गहन आकांक्षा है। आप का विदेशी भाषाओं और विदेशी संस्कृति की ओर काफी रुझान है। विदेश में जन्मे व्यक्ति या विदेश में यात्रा करते समय मिले किसी व्यक्ति से विवाह होने की संभावना है। संभव है कि आप अपना धर्म भी बदल लें

आप एक उपदेशक, शिक्षक, दार्शनिक, पुजारी, आध्यात्मिक मार्गदर्शक, आदि की भूमिका के लिए पूरी तरह से उपयुक्त हैं। आप को स्वयं के व्यावसायिक

उपक्रमों में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है परन्तु दूसरों के धन का आनंद और लाभ आप को प्राप्त होता है . आप निरंतर परेशानियों और चिंताओं का जीवन जीते हैं. आप दिखावटी, अहंकारी और एक अवसरवादी भी हो सकते हैं. कभी-कभी आप अति विश्वासी, अड़ियल या आक्रामक भी हो जाते हैं .आप को उपहार या दान के रूप में चांदी या चांदी के सामान को कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए और जहां तक संभव हो चांदी का दान करना चाहिए

**सूर्य
मंत्र**

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ॥



चंद्रमा में मन, शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा पानी और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा हुआ है, यह एक दुर्लभ ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है। चंद्रमा भावनाओं, कल्पना, माता, हृदय, स्मृति, नींद, यात्रा, इच्छा, बचपन, बुद्धि से सम्बंधित है। चंद्रमा व्यक्ति की इच्छाओं और पसंद से सम्बंधित है।



आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि
कर्क

अंश
21:42:47

नक्षत्र
अश्लेषा - 2

स्वामी
दूसरा भाव

भाव में
दूसरा भाव

अस्त/अवस्था
नहीं / कुमार

चन्द्र आपकी कुंडली में सम है



आपके जन्मपत्रिका में चन्द्र दूसरा भाव में एवं कर्क राशि में स्थित है।

आप एक मनोहारी और कलात्मक व्यक्ति हैं जिनको सांसारिक जीवन के सुख साधनों का भरपूर आनंद मिलता है। आप एक सुंदर चेहरे के साथ एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी हैं। आप में अपनी निष्ठल वाक-शक्ति द्वारा दूसरों को सम्मोहित करने की क्षमता है। आप अपने परिवार की परंपराओं और मूल्यों का सम्मान करते हैं। आपका सहज स्वभाव और भावनात्मक सुख आपके भौतिक साधनों के साथ जुड़े हुए हैं। वित्तीय व घरेलू सुरक्षा आप के आत्मविश्वास को निर्धारित करते हैं। धन संपत्ति और भौतिक वैभव आपको आश्वासित रखते हैं। पैतृक संपत्ति के माध्यम से धन प्राप्त करने की संभावना है

“ आपकी आँखें सुन्दर तथा आवाज़ सशक्त हैं

आपका मन प्रायः अस्थिर रहता है। आप अक्सर अपने परिवार के सदस्यों या दूसरों के कथन तथा विचारों से अपने आप को प्रभावित महसूस करते हैं। मित्र, सहकर्मी, यहाँ तक कि परिस्थितियाँ भी आपके पक्ष और समर्थन में रहेंगीं। आपको अपने परिवार से सुख और प्रोत्साहन मिलता रहेगा। आपकी वित्तीय स्थिति में नित्य परिवर्तन और उतार चढ़ाव होते रहेंगे। आप में लोगों और चीजों दोनों पर पकड़ रखने की प्रवृत्ति है। आप को जन साधारण या सार्वजनिक वस्तुओं के

माध्यम से लाभ होता रहेगा . आपको वित्तीय / निवेश के क्षेत्र में सफलता मिलेगी

आप परिवार के कारोबार में शामिल हो सकते हैं . महिलाएँ आप के लिए भाग्यशाली हो सकती हैं और उनके द्वारा आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है.

आप को कम उम्र ही में सरकारी पक्ष द्वारा व्यावसायिक उपलब्धि प्राप्त होने की संभावनाएं हैं .असहमति के कारण भागीदारी में साझीदार अथवा रिश्तों में पति के साथ भावात्मक मतभेद का सामना करना पड़ सकता है . आप निर्बल पाचनशक्ति और भूख की कमी से पीड़ित हो सकते हैं . आप को नेत्र संक्रमण की भी शिकायत हो सकती है . छोटी कन्यायों को उपहार के रूप में हरे रंग के कपड़े भेंट दें

**चंद्र
मंत्र**

॥ ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ॥



ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह हिम्मत और तानाशाही से सम्बंधित है। मंगल ग्रह को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है। मंगल, शक्ति, साहस, क्रोध, दुश्मन, हिंसा, छोटे भाई, बल, मांसपेशियों और वीरता से सम्बंधित है।



आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि तुला	अंश 16:28:42	नक्षत्र स्वाति - 3
स्वामी ग्यारहवाँ, छठा भाव	भाव में पाँचवा भाव	अस्त/अवस्था नहीं / युवा

मंगल आपकी कुंडली में हानिप्रद है



आपके जन्मपत्रिका में मंगल पाँचवा भाव में एवं तुला राशि में स्थित है।

आप में अपार शक्ति है और सांसारिक सुखों की ओर पूरी उर्जा के साथ क्रियाशील रहते हैं। आप रचनात्मक और कलात्मक गुणों से संपन्न हैं। आप आक्रामक, मेहनती हैं और गुरुसैल स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप में दूसरों पर हावी होने की प्रवृत्ति है। आप स्वयं संघर्ष या मानसिक व्यथा से पीड़ित हो सकते हैं। आप का रवैया कुछ हद तक दिखावाटी हो सकता है। आपको जोखिम और चुनौतियों का सामना करना पसंद है; परन्तु आपमें धैर्य की कमी है। आपको लोगों की आलोचना का सामना करना पड़ सकता है। आपको जुआ या सट्टेबाजी का शौक हो सकता है

“ आप कुशाग्र बुद्धि है

आप आउटडोर खेल में विशेष रुचि है। आपका शरीर पुष्ट है। आप खेल प्रेमी और उद्यमी हैं; साथ ही आप जीवन के हर रंग का रास लेने में विश्वास रखते हैं। आप एक प्रसिद्ध खिलाड़ी हो सकते हैं। आप चिकित्सा विज्ञान और कानून के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में सक्षम हैं। आप अक्सर अपने साथी बदलते रहते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति यकीनन काफी आकर्षण हो सकता है। आप को अंतरंग प्रेम संबंधों में कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप के अपने पिता के साथ मतभेद हो सकते हैं

आप को प्रेम संबंधों में सफलता मिलेगी और आप अपने पत्नी और बच्चों के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे . लेकिन पहले बच्चे के जन्म में कठिनाई हो सकती है . आपके अपने बच्चों के साथ कुछ मनमुटाव हो सकता है.आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा . आप की आयु लम्बी है . फिर भी आप को पेट और रक्त प्रवाह से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है .गलत लोगों के साथ दोस्ती आप को मुसीबत में डाल सकती है; यहां तक कि जेल में भी जाना पड़ सकता है . खेतीबाड़ी के लिए संपत्ति न खरीदें

**मंगल
मंत्र**

॥ ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ॥



बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह भाषण और तर्क से सम्बंधित है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है। बुध स्मृति, भाषण, राजनीति, व्यापार और व्यापार, मित्रों, मामा, चाचा, भतीजे, दत्तक पुत्र और तर्क से सम्बंधित है।



आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि
मीन

अंश
02:59:56

नक्षत्र
पूर्व भाद्रपद - 4

स्वामी
पहला , चौथा भाव

भाव में
दसवां भाव

अस्त/अवस्था
नहीं / मृत

बुध आपकी कुंडली में सम है



आपके जन्मपत्रिका में बुध दसवां भाव में एवं मीन राशि में स्थित है।

भाषा और संचार आपके जुनूनी शौक हैं . आप अधिकार के साथ बात करते हैं और आप में संतुलित तथा व्यवहारिक वार्ता का कौशल है . कुछ नया और रोमांचक की तलाश में आप अक्सर करियर बदलते रहते हैं . आप ऐसे व्यवसायों की ओर खिंचे चले जाते हैं जहाँ आप को विश्लेषण और संगठन करने तथा स्वतंत्र रूप से बोलने के अवसर मिलें . आप अपने पेशे में वाणी तथा लेखन का भरपूर प्रयोग कर सकते हैं . अध्यापन के क्षेत्र में आप का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है . आप में कई प्रतिभाएँ विद्यमान हैं, जिस वजह से आप एक साथ कई कार्यों में संलग्न हो सकते हैं . दलाली, प्रोफेसरी, पत्रकारिता, वकालत, ज्योतिष, लेखांकन, विज्ञापन, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्रों में आपको यश प्राप्त होगा. आप कंप्यूटर, संगीत वाद्ययंत्र, रेडियो, टेलीविजन, इलेक्ट्रॉनिक आइटम आदि के व्यापार में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर सकते हैं

“ आपकी मानसिक सतर्कता और निपुणता तथा नेतृत्व के गुण आप की मुख्य पूंजी हैं

आपके व्यवसाय में निरंतर भ्रमण करते रहने की संभावना है . अपनी विस्तृत बुद्धि और कुशल संचार कौशल के बल पर अपने लिए निर्धारित किसी भी

कैरियर में बहुत सफल होंगे . आप को जीवन में सम्मान, सत्ता, रुतबा, पद प्राप्त होंगे . आप साहसी, निर्मल मन और अच्छे आचरण वाले व्यक्ति हैं . आप कई विषयों की जानकारी रखते हैं . आप अपने मधुर स्वभाव और महान कार्यों के लिए लोकप्रियता हासिल करेंगे . आपके कई मित्र तथा समर्थक होंगे . आप को विरासत में पैतृक संपत्ति मिलने की संभावना है आप अपने स्वयं के प्रयासों से अच्छे घर का निर्माण कर पायेंगे

आप वैवाहिक जीवन और मानसिक सुख का आनंद उठा पायेंगे . दमा, हर्निया, गुर्दे और पेट से संबंधित रोग आप को परेशान कर सकते हैं . हवाई और समुद्री यात्रा आप के लिए हानिकारक साबित हो सकती हैं . मांसाहार और शराब का सेवन न करें . धार्मिक स्थानों में चावल और दूध का दान दें . अपने घर को किराए पर मत दें . अपने घर के ईशान कोण (उत्तर पूर्वी कोने) में एक तुलसी का पौधा अवश्य लगाएं.

**बुध
मंत्र**

॥ ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥



बृहस्पति को मंत्रि ग्रह माना जाता है जो ज्ञान, खुशी और अच्छे भाग्य से संबंधित है। बृहस्पति धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा दादी और शाही सम्मान का कारक है। यह धार्मिक धारणा, भक्ति और लोगों के विश्वास को दर्शाता करता है।



आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि
मीन

अंश
09:36:14

नक्षत्र
उत्तर भाद्रपद - 2

स्वामी
सातवाँ, दसवाँ भाव

भाव में
दसवाँ भाव

अस्त/अवस्था
नहीं / वृद्ध

गुरु आपकी कुंडली में हानिप्रद है



आपके जन्मपत्रिका में गुरु दसवाँ भाव में एवं मीन राशि में स्थित है।

आप एक सौहार्दपूर्ण और उदार स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप का व्यक्तित्व विनम्र और मृदु है। आप के चुंबकीय व्यक्तित्व की वजह से लोगों को यकीन हो जाता है कि आप उन्हें निराश नहीं करेंगे। आप एक स्वाभाविक नेता और मार्गदर्शक हैं - सदा दूसरों की भलाई हेतु कुछ करने के लिए प्रेरित और तत्पर रहते हैं। आप शारीरिक रूप से थोड़े आलसी या सुस्त हो सकते हैं। आम तौर पर आप मधुर स्वभावी रहते हैं लेकिन कभी कबार आप बहुत ही चिड़चिड़े और गुस्सैल भी हो सकते हैं।

“ आप एक आकर्षक और शांतचित्त व्यक्तित्व के स्वामी हैं

ऐसे में छोटी छोटी साधारण बातों से मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है। स्वादिष्ट भोजन आपकी कमजोरी है। अपने कैरियर के मामले में आप सुबोध और परिपक्व दृष्टिकोण रखते हैं। आप जन्मजात बुद्धिमान और व्यवहार कुशल हैं जिस कारण आप किसी भी पेशे में सफल हो पाएंगे। आप ईमानदारी और सच्चाई में विश्वास रखते हैं और अपने कार्यस्थल पर सभी आवश्यक मानदंडों और परंपराओं का पालन करते हैं। आप का व्यावसायिक जीवन बहुत ही

संतोषजनक और शांतिपूर्ण रहेगा

आपको अपने पेशे में या अपने समुदाय में विस्तार और सफलता के कई अवसर प्राप्त होंगे . आप में दूसरों को अपने व्यापक, दूरदर्शी योजनाओं, सपनों और नज़रिये में शामिल करने की क्षमता है .प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं; परन्तु इन मुश्किलों को पार करने के बाद आप उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर पायेंगे . आपके जीवन में ४० - ५४ वर्ष की आयु का दौर एक बहुत ही अनुकूल समय होगा .घर के क्षेत्र के भीतर मंदिर का निर्माण न करवाएं . कोई भी काम शुरू करने से पहले आप अपनी नाक जरूर साफ करें

**गुरु
मंत्र**

॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ॥



वीनस कामुक सुख और कामुक आवेगों से सम्बंधित है। चमक और जीवन शक्ति का ग्रह होने के नाते भौतिकवाद और मांस के आनंद को दर्शाता है। वीनस को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का महत्व का कारक माना जाता है। यह जुनून, विवाह, लकजरी लेख, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।



आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि
मीन

अंश
14:05:41

नक्षत्र
उत्तर भाद्रपद - 4

स्वामी
बारहवां, पाँचवा भाव

भाव में
दसवां भाव

अस्त/अवस्था
नहीं / युवा

शुक्र आपकी कुंडली में योगकारक है



आपके जन्मपत्रिका में शुक्र दसवां भाव में एवं मीन राशि में स्थित है।

आप बहुत बुद्धिमान और तेजस्वी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं। अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु आप अपना सर्वस्व और सर्वोत्कृष्ट प्रयास लगा देते हैं। आप के मनमोहक शिष्टाचार के कारण लोग आप का सम्मान करते हैं। आप दुनिया को प्यारभरी और आशावादी दृष्टिकोण से देखते हैं। आप न्याय, संतुलन और सामंजस्य के समर्थक हैं। आप संपर्क बनाने और सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करने में निपुण हैं। आपका पुरुषों की तुलना में महिलाओं के साथ अधिक व्यवहार रहता है। समाज में अपनी पहचान बनाये रखना आपके लिए अति आवश्यक है

“ आप में विलक्षण दृष्टि और रचनात्मक गुण हैं

आप निर्णय लेने में बहुत अधीर या अस्थिर हो सकते हैं। मामूली बातों पर भी आप बहुत तेजी से क्रोधित हो जाते हैं। आप कुछ हद तक लोभी और भौतिकवादी हो सकते हैं। आप कला, सौंदर्य उत्पादन, एंटीक्स, इंटीरियर डेकोरेशन, ब्यूटीशियन, मनोरंजन, रंगमंच, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, वित्तीय प्रबंधन और नियंत्रण जैसे कैरियर के लिए उपयुक्त हैं। पुलिस, न्यायाधीश, राजनीतिज्ञ जैसे अन्य प्रभुत्व के पदों की तरफ आप आकर्षित हो सकते हैं। आप एक अच्छे

वक्ता या गायक बन सकते हैं . लोगों को रिझाने और प्रेरित करने के लिए आप अपनी आवाज का इस्तेमाल कर सकते हैं . आप की आर्थिक स्थिति बहुत आरामदायक होगी

अपने मधुर स्वभाव और मैत्रीपूर्ण प्रकृति के कारण आप अपने कैरियर और साधारण जीवन में भी काफी लोकप्रिय हैं . आपके विवाह में देर हो सकती हैं. जब तक आपको अपनी पति/पत्नी का साथ मिलता रहेगा, तब तक सभी प्रकार की मुसीबतों से आप बचें रहेंगे . संतान उत्पत्ति में समस्या हो सकती है. विवाहेतर सम्बन्ध आपके बच्चों के हित के लिए हानिकारक हैं .शराब और मांसाहारी भोजन से दूर रहें . अपने आसपास के परिवेश में पेड़ पौधे लगवाना आपके लिए शुभ होगा . अपनी पत्नी का सम्मान करें

**शुक्र
मंत्र**

॥ ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ॥



शनि एक धीमी गति का ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को एक शिक्षक के रूप में भी माना जाता है। शनि लंबी उम्र से सम्बंधित है। यह देरी, अवरोध, दुः ख, नुकसान, चोरी, बुढ़ापे, दुः ख, प्रतिकूलता और आजादी से सम्बंधित है।



आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि
मेष

अंश
06:05:09

नक्षत्र
अश्विनी - 2

स्वामी
आठवाँ ,नौवां भाव

भाव में
ग्यारहवाँ भाव

अस्त/अवस्था
नहीं / कुमार

शनि आपकी कुंडली में लाभप्रद है



आपके जन्मपत्रिका में शनि ग्यारहवाँ भाव में एवं मेष राशि में स्थित है।

आप एक शांत और सहनशील व्यक्ति हैं . आप मुक्त आत्मा हैं; आपको अपने व्यक्तिगतता बहुत प्रिय है . आप की काफी उम्मीदें और सपने हैं और आप अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति पूर्णतया समर्पित हैं . अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आप कर्तव्यनिष्ठा और जिम्मेदारी से कड़ी मेहनत करते हैं . सहनशीलता और धैर्य आपकी ताकत हैं . कभी कभी आप कुछ हद तक झूठ बोलते हैं और छल भी कर सकते हैं .आप गंभीर या उद्देश्ययुक्त समूहों के प्रति आकर्षित होते हैं . समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है और लोगों के साथ आपके संबंध मधुर ही होते हैं . आप हर आयु समूह के साथ घुल मिल जाने में सक्षम हैं

“ आप काफी बहादुर और समझदार हैं

लोग आप का सम्मान करते हैं . आप के कई परिचित होंगे, लेकिन केवल कुछ ही करीबी मित्र हैं . विपरीत लिंग के लोगों के साथ आप के घनिष्ठ और अंतरंग संबंध हो सकते हैं .आप को जीवन में कई बार नेतृत्व और आधिकारिक पद प्राप्त हो सकते हैं . आप का भविष्य राजनीति और शिक्षण के क्षेत्रों में उज्ज्वल है .

आप टेक्नोलोजी और वित्त से संबंधित काम में सफल हो सकते हैं . आप आंतरिक सजावट, इवेंट मैनेजमेंट, कार डिजाइनिंग, नेटवर्किंग, आदि का व्यवसाय कर सकते हैं . आप जो भी रास्ता चुनते हैं, उसके प्रति बहुत समर्पित रहते हैं

आप को अपने बच्चों के द्वारा और अपनी स्वयं की रचनात्मकता से लाभ होगा.आप के अपने परिवार के सदस्यों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होंगे - विशेष रूप से अपने भाईबहनों के साथ . आप को माता पिता की जायदाद विरासत में प्राप्त होगी .आप के अपने परिवार के सदस्यों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होंगे - विशेष रूप से अपने भाईबहनों के साथ . आप को माता पिता की जायदाद विरासत में प्राप्त होगी .ठण्डे, तले हुए और गरिष्ठ भोजन और मदिरा से दूर रहें . चरित्र और अंतर्मन को शुद्ध और निष्कलंक रखें . अपने घर को स्वच्छ और हवादार रखें

**शनि
मंत्र**

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ॥



अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सिडेंटलिज्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।



आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि कर्क	अंश 27:27:55	नक्षत्र अश्लेषा - 4
स्वामी चौथा भाव	भाव में दूसरा भाव	अस्त/अवस्था नहीं / बाल



आपके जन्मपत्रिका में राहु दूसरा भाव में एवं कर्क राशि में स्थित है।

आप धन, प्रतिष्ठा और राजसी जीवन का आनंद उठाएंगे। आप में दौलत और ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल इच्छा है। आप आर्थिक रूप से विशेषाधिकार प्राप्त लोगों या असाधारण जानकार व्यक्तियों की ओर मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं। आप कभी संतुष्ट नहीं रहते। आपके व्यवहार में बहुत अनिश्चितता है। आप बातचीत ऊँची आवाज़ में और गाली गलीच के साथ करते हैं। आप के शब्द छलावा होते हैं। आप को व्यावहारिकता, शारीरिक सहनशक्ति, और दृढ़ता को विकसित करने की जरूरत है

“ आप को विशेषाधिकारों और श्रेष्ठता की लालसा है

आप दूसरों के नुकसान के बारे में नहीं सोचते; आपको अपने ही लाभ के बारे में चिंता रहती है। आप कुसंगति का शिकार हो सकते हैं या पैसे कमाने का गलत रास्ता अपना सकते हैं। संपत्ति, नौकरी और व्यापार के माध्यम से आप को सफलता प्राप्त होगी। आपका व्यवसाय फलेगा; आप काफी तेजी से धन जमा करेंगे और आकस्मिक भाग्योदय भी संभव है। आप शेयर बाज़ार, दलाली, घोड़ों की रेस, पान, तंबाकू और नशीले पदार्थों संबंधित व्यवसाय कर सकते हैं। आप जुआ, सट्टेबाज़ी से भी बहुत सारा पैसा कमा सकते हैं। आप एक बैंकर, कोषाध्यक्ष, पुस्तकालय अध्यक्ष, भाषाविद्, आदि के रूप में सफल रहेंगे। आप विदेशी भूमि में काफी धन संपत्ति कमा सकते हैं

आपके विवाहित जीवन में अहंकार की वजह से संघर्ष और द्वन्द्व हो सकते हैं। आप का अपने परिवार के सदस्यों के साथ मतभेद और टकराव हो सकता है; आपके पारिवारिक झगड़ें पुलिस थाने और अदालत आदि तक पहुँच सकते हैं। बचपन में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा। आप को चोटें लगने की

संभावनाएं अधिक रहती हैं . आप कंधे व सिर दर्द, मुंह में छाले, पेट के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं . आप मिलावटी, दूषित खाद्य पदार्थ खाने से कभी-कभी बीमार पड़ सकते हैं, सावधान रहें .जेब में छोटा ठोस चांदी का गोला रखें. अपनी माँ व माँ तुल्य स्त्रियों का सम्मान करें

**राहु
मंत्र**

॥ ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ॥



केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह आध्यात्मिकता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।



आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि मकर	अंश 27:27:55	नक्षत्र धनिष्ठा - 2
स्वामी दसवां भाव	भाव में आठवां भाव	अस्त/अवस्था नहीं / बाल



आपके जन्मपत्रिका में केतु आठवां भाव में एवं मकर राशि में स्थित है।

आप बुद्धिमान और दूरदर्शी व्यक्ति हैं; आप नैतिकता में विश्वास करते हैं। आप धार्मिक स्वभाव के हैं। आप में न तो साहस है और न ही किसी बात का डर है। आप को ध्यान, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र जैसे संबंधित विषयों में रुचि हो सकती है। आप के अस्तित्व और विचार दोनों ही स्थिर और वस्तुगत हैं। आप को झगड़ों और प्रियजनों से विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वभाव से अंतर्ज्ञानी हैं। आप सहजता परदे के पीछे क्या हो रहा है - इस बात का पता लगा लेते हैं। आप आसानी से गुप्त रिश्तों को बनाए रख सकते हैं।

“ आप मेहनती हैं और एक सख्त अनुशासन में विश्वास रखते हैं

समय के साथ आप में अलौकिक शक्तियां जागृत होंगीं। बचपन या अतीत में अनुभव की गयी कई वित्तीय परेशानियों के कारण आप जीवन में आर्थिक स्थिरता को उपार्जित करने में अधिक रुचि रखते हैं। आय और वित्तीय मामलों में समस्याएं आ सकती हैं जिसके कारण जीवन में कई बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। भूमि / संपत्ति / सामग्री के कारोबार, लोहे, खदान और मशीनरी से संबंधित व्यापार आपके लिए फायदेमंद हो सकते हैं। आप ज्योतिष, अध्यात्म और अनुसंधान के क्षेत्र में भी अच्छा व्यवसाय कर सकते हैं। आप का एक बड़े, विस्तारित परिवार होगा। आप को अपने प्रियजनों से अलग रहना पड़ सकता है। विवाहेतर प्रेम संबंध संभव हैं।

गर्भपात हो सकता है। २६ वर्ष की आयु के बाद पारिवारिक जीवन में कुछ परेशानियां आ सकती हैं। आप रक्त विकार, त्वचा रोग, मधुमेह और मूत्र समस्याओं और गुप्त रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आप आकस्मिक अभिघात और दुर्घटनाओं से ग्रस्त हो सकते; आपका जीवन भी खतरे में पड़ सकता है। एक कुत्ता पालें

और उसकी सेवा करें . जरूरतमंद लोगों को काले और सफेद रंग का कंबल दान करें . यदि संभव हो तो, कान में सोना पहनें . केसर का तिलक लगाएं

**केतु
मंत्र**

॥ ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः॥

संकटा योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि: 23-8-2019 23:55

समाप्ति तिथि: 23-8-2027 23:55

संकटा योगिनी दशा की आठवीं दशा है। इसकी अवधि 8 वर्षों की है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। राहु के प्रकोप की वजह से इस अवधि का परिणाम प्रतिकूल होता है। जैसा कि सभी जानते हैं कि राहु को दुर्भाग्य, दुख और शोक लाने के लिए जाना जाता है, इसलिए इस अवधि के दौरान भी आपको अपने जीवन के सभी पहलुओं में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

आपके रोजगार के क्षेत्र में भी स्थिति आपके अनुकूल नहीं होने की संभावना है। ऐसी संभावना है कि कार्य क्षेत्र में आपको आपके वरिष्ठ आपके विचार से सहमत नहीं होंगे और आपके लक्ष्य को प्राप्त करने में आपका समर्थन न दें। अपने सहकर्मी के साथ भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि बातचीत के दौरान आप शांत और विनम्र रहने की कोशिश करें क्योंकि आपका ये व्यवहार आपकी नौकरी पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। व्यापार के क्षेत्र में यदि आप आगे बढ़ना चाहते हैं तो आपको हानि होने की संभावना है। आपको अपने जीवन में अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप अपने कार्यक्षेत्र में कुछ कानूनी मुद्दों में भी फंस सकते हैं जिसकी वजह से आपको कारावास भी हो सकता है या जुर्माना भरना पड़ सकता है। आप समझ में होनी इज्जत, प्रतिष्ठा खो सकते हैं। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप किसी भी अवैध गतिविधि में शामिल न हों।

इस अवधि के दौरान आप अपने किसी प्रियजन को खो सकते हैं। इस अवधि के दौरान आपके बच्चों को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, ऐसी संभावना है कि उसको उनके मन के हिसाब के विद्यालय में नामांकन न मिले या परीक्षा का परिणाम मन के अनुकूल न हो। आपको इस अवधि के दौरान अपने मन को शांत रखने की कोशिश करें और जल्दबाजी में कोई भी फैसला लेने से बचें।

उपाय

- राहु की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए गगूल, मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सूखी अदरक, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग कर करके हवन कर सकते हैं। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, कुर्सियां, सोफा, गिलोय, नींबू और करहल के बीज का प्रयोग आप हवन में कर सकते हैं।

- राहु केतु विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

संकटा - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि: 23-8-2019 23:55

समाप्ति तिथि: 3-6-2021 7:55

संकटा योगिनी की पहली अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 3 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "राहु" है। राहु की दशा में राहु की अंतर्दशा होने की वजह से इस अवधि के परिणाम भी प्रतिकूल होते हैं। आपको जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। आमतौर पर यह एक प्रतिकूल अवधि ही है। इस अवधि के दौरान आपको रोजगार के क्षेत्र में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। आपको आपके वरिष्ठ अधिकारियों की नाराजगी, काम करने में बाधा इत्यादि का सामना करना पड़ सकता है। सरकारी कार्यों में भी कोई न कोई बाधा लगी रहती है इसके साथ ही आपको अपनी वर्तमान नौकरी को छोड़ कर किसी दूसरे जगह भी जाना पड़ सकता है।

आपको ये सलाह दी जाती है कि आप केवल अपने काम पर अपना ध्यान केंद्रित रखने की कोशिश करें और ये सुनिश्चित करें कि आप अपने नियोक्ता द्वारा निर्धारित किसी भी प्रणाली, प्रक्रियाओं, नियमों का पालन करते हैं।

इस अवधि के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो सकती है जिसके अनेक कारण होंगे। आपकी आय में कटौती हो सकती है और व्यापार में किये गए निवेश में भी आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपनी कमाई में से कुछ बचत करने की कोशिश करें जो इस कठिन परिस्थिति के आपके लिए लाभप्रद साबित होगी। इस अवधि के दौरान आप अपने और अपने प्रियजनों की सेहत का ध्यान रखें क्योंकि इस अवधि में आपको अपने किसी प्रियजनों के खोने की संभावना है।

उपाय

- राहु को मजबूत करने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग करना चाहिए। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, सोफ, गिलोय, नींबू का प्रयोग हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हरी दूर्वा घास या ईख का भी हवन में प्रयोग करना चाहिए। संकटा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि: 3-6-2021 7:55

समाप्ति तिथि: 23-8-2021 11:55

संकटा योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 6 महीने 11 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चंद्रमा के प्रभाव की वजह से इस अवधि के परिणाम भी प्रतिकूल ही होते हैं। इस अवधि का असर आपके मानसिक और शारीरिक दोनों स्थिति पर पड़ता है।

इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखना चाहिए। आपको मस्तिष्क संबंधी समस्या का हो सकती है, जिसका ईलाज करवाना आपके लिए बेहद जरूरी होगा। आपको अपने साथ-साथ अपने परिवारजनों तथा अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का भी ख्याल रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान आपकी माता पर स्वास्थ्य संबंधी खतरा हो सकता है, इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने परिवार का एक निर्धारित नियमित स्वास्थ्य जांच करवाते रहें ताकि भविष्य में आने वाले किसी भी खतरे को टाला जा सके।

यदि व्यक्तिगत संबंध की बात करें तो आपके परिवार और आपके जीवनसाथी दोनों के साथ आपके तालमेल ठीक नहीं बैठने की संभावना है। आपके और आपके जीवनसाथी के बीच किसी बात को लेकर गलतफहमी हो सकती है जिसकी वजह आपके बीच मतभेद होने की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि ऐसी परिस्थिति में बात को आगे न बढ़ने दें और जीवनसाथी के साथ बैठ कर बातचीत कर के अपने बीच की इस गलतफहमी को दूर करने का प्रयास करें। अन्यथा ये गलतफहमी आपके रिश्ते को खराब कर देगी।

चंद्रमा का स्वभाव है मन और भावनाओं पर शासन करना ऐसे में इस अवधि के दौरान आप मानसिक और भावनात्मक रूप से पीड़ित हो सकते हैं। लगातार बने इस तनाव और प्रतिकूल परिस्थिति आपको अस्वस्थ बना सकती है इसके साथ ही आप बुरी आदतों के शिकार हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने विवेक से काम लें और अपने मन को शांत रखने की कोशिश करें।

संकटा - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि: 23-8-2021 11:55

समाप्ति तिथि: 1-2-2022 19:55

संकटा योगिनी की तीसरी अन्तर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 9 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के कठोर प्रभाव का असर इस अवधि पर भी पड़ता है जिसकी वजह से ये अवधि भी प्रतिकूल परिणाम देता है। इस अवधि के दौरान आपको मानसिक परेशानी हो सकती है इसके साथ ही आपको अपने व्यक्तिगत संबंध में भी कुछ समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

इस अवधि के दौरान आपके कई शत्रु हो सकते हैं, जो आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं या आपको परेशानी में डाल सकते हैं। इस स्थिति की वजह से आप तनाव में रह सकते हैं। इस अवधि के दौरान आपके बच्चे दुःखी और परेशान रह सकते हैं या फिर आपको आपके बच्चों से संबंधित कोई दुखी करने वाले समाचार मिल सकते हैं। ऐसी भी संभावना है कि इस अवधि के दौरान आपके बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने बच्चों के साथ कुछ समय बिताने की कोशिश करें ताकि आपके बच्चों अपनी परेशानी आपके साथ साझा कर सकें और आप उनकी समस्या का निदान ढूंढ पायें।

आर्थिक रूप से भी ये समय आपके लिए भारी सिद्ध होगा आपको कई सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके रोजगार के क्षेत्र में आपको खतरा हो सकता है जैसे आपकी आय कम हो सकती है या आपकी नौकरी जा सकती है या फिर आपको व्यापार के निवेश में नुकसान हो सकता है। आपको अपनी कीमती चीजों को संभाल के रखने की आवश्यकता हो क्योंकि आपके घर चोरी होने की भी संभावना है।

आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप सतर्क रहें और अपने दिमाग को शांत रखने की कोशिश करें।

उपाय

- आप पलाश के पेड़ के उत्पादों जैसे लकड़ी, फूल और पत्तियों का उपयोग कर सकते हैं। सफेद चंदन, सीपियां, पानी और रेशे वाला नारियल तथा नारियल के रेशों से बनी वस्तुओं का उपयोग करना भी आपके लिए लाभकारी रहेगा। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ पलाश, डाक के पत्ते और टहनियों का भी उपयोग करना चाहिए। संकट मंगल दशा के दौरान उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।
- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि: 1-2-2022 19:55

समाप्ति तिथि: 3-10-2022 7:55

संकटा योगिनी की चौथी अंतर्दशा "धन्या अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 11 महीने 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" को माना गया है। बृहस्पति और राहु दोनों के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी दोनों ग्रहों के हिसाब से मिश्रित ही प्राप्त होता है। ये अवधि आपके लिए शुभ और अशुभ दोनों तरह के परिणाम लाता है। बृहस्पति को सौभाग्य लाने वाला माना जाता है इसलिए इसपर राहु का असर भी बहुत कम होता है।

यदि इस अवधि के शुभ प्रभाव की बात करें तो आपके रोजगार के क्षेत्र के क्षेत्र में ये अवधि शुभ प्रभाव देता है। इस अवधि के दौरान आपके भविष्य के लिए बेहतर मार्ग खुलेंगे और आपको विदेश जाने के अवसर प्राप्त होंगे। आपको विदेश में भी अच्छे ऑफर और अच्छे संबंध स्थापित करने के मौके मिलेंगे।

व्यक्तिगत संबंध के क्षेत्र में भी आपको शुभ परिणाम मिलने की संभावना है। आपको अपने बच्चों से अच्छी खबर मिलने की संभावना है। इस अवधि में आप अपने पारिवारिक सुख और शांति का आनंद लेंगे और अपनी छुट्टियों का वक्त अपने परिवार के साथ बिता सकते हैं।

इस अवधि के अशुभ पक्ष में आपका स्वास्थ्य आता है। स्वास्थ्य की यदि बात करें तो ये अवधि आपके स्वास्थ्य के लिए बिल्कुल भी शुभ नहीं है। आपको पेट, सर्दी-खांसी, दस्त इत्यादि जैसी समस्याएं लगी ही रहेगी। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि में आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें और नियमित स्वास्थ्य जांच करवाते रहें।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ के फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी तथा आंवला जैसी वस्तु अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या एक से अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करना लाभकारी सिद्ध होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि: 3-10-2022 7:55

समाप्ति तिथि: 23-8-2023 23:55

संकटा योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "भ्रामरी अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 13 महीने और 10 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" है। मंगल के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी प्रतिकूल होता है। ये अवधि आपके लिए धन, वैभव, ऐश्वर्य के क्षेत्र में चिंताएं लेकर आता है।

ये अवधि आपके करियर के हिसाब से परेशानी का कारण बन सकता है, इसमें आपको आगे बढ़ने के मौके तो मिलेंगे किन्तु उसमें बाधा भी बहुत आयेगी। आपको विदेश यात्रा के मौके मिलेंगे किन्तु आपको इस तरह के मौकों की पूरी जांच कर लेने के बाद ही आगे की योजना बनानी चाहिए। यदि आपको विदेश यात्रा के अवसर नहीं मिलते हैं तो आपको बेहतर रोजगार के मौकों के लिए अपने घर से दूर रहना पड़ सकता है।

इस अवधि में आपको अपने शत्रु से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वो आपको नुकसान पहुंचाने की पूरी कोशिश करेंगे किन्तु आपका कुछ बिगाड़ नहीं पायेंगे। हालांकि इस सब की वजह से आपको मानसिक और भावनात्मक तनाव हो सकता है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप किसी भी कार्य को करते हुए या किसी से बात करते हुए अपने मन को शांत रखें और जल्दीबाजी में कोई फैसला न लें।

इस अवधि के दौरान आपको स्वास्थ्य संबंधी भी चिंता घेर सकती है इसलिए आपको अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

उपाय

- बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, ब्राह्मी, साबुत लाल मिर्च, काली सरसों और हरड़ का उपयोग आपके मंगल को बल देने के लिए किया जाना चाहिए। मुख्य सामग्री के साथ हवन करते समय, हवन में पीपल के पेड़ की शाखा, पत्तियों का उपयोग करना चाहिए। संकटा भ्रामरी दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ होगा।

- आप अपनी विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभ उठा सकते हैं।

संकटा - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि: 23-8-2023 23:55

समाप्ति तिथि: 2-10-2024 19:55

संकटा योगिनी की छठी अंतरदशा "भद्रिका अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 16 महीने और 2 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी के रूप में "बुध" को माना गया है। बुध के प्रभाव की वजह से ये अवधि अनुकूल परिणाम देने में सक्षम है। इस अवधि में आपको धन, वैभव की प्राप्ति होगी।

ये अवधि आपके जीवन में लगातार चल रही परेशानी से राहत देगा। इस अवधि में आपके संबंध बेहतर होंगे तथा आपको आगे बढ़ने के मौके मिलेंगे।

ये अवधि आपके लिए आसान तो नहीं होगा किन्तु अपनी मेहनत से आप पहले से चली आ रही परेशानी से निजात पा सकते हैं। इस अवधि में आप कई सारी ज्ञान की चीजें सीख सकते हैं। यदि आप कोई ऐसी पढ़ाई करना चाहते हैं जो कि आप कई दिनों से चाह रहे थे किन्तु आपको मौका नहीं मिल रहा था तो ये अवधि आपके लिए सही समय है उन चीजों में अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए। जो लोग रोजगार के क्षेत्र में बेहतर करना चाहते हैं उनकी बेहतर नौकरी की तलाश इस अवधि में पूरी हो सकती है साथ ही आपके आय वृद्धि या पदोन्नति की भी संभावना है।

आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा, आपकी स्थिति पहले से अच्छी होगी। पैसे की तंगी दूर होने की वजह से आप अपने महंगे शौक पूरे करने की कोशिश करेंगे। आराम और सुख-सुविधा की सारी चीजें आप खरीद सकते हैं। आपको ये सलाह दी जाती है कि यदि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी हुई है तो ये काफी अच्छी बात है किन्तु आपको अपने धन का खर्च थोड़ा संभल के करना चाहिए ताकि कभी किसी मुसीबत में आपके बचाये हुए धन आपके काम आ सके। आप जल्दबाजी में कोई फैसला न लें और किसी भी चीज पर विचार शांत मन से करें।

संकटा - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि: 2-10-2024 19:55

समाप्ति तिथि: 1-2-2026 19:55

संकटा योगिनी की सातवीं अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 18 महीने और 18 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी के रूप में "शनि" को माना जाता है। राहु की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से इस अवधि में कोई न कोई परेशानी लगी ही रहती है तथा ये अवधि आमतौर पर प्रतिकूल अवधि मानी जाती है।

इस अवधि के दौरान आपके जीवन में चुनौतीपूर्ण स्थिति बन सकती है। इस अवधि के दौरान सबसे प्रमुख चिंता का विषय आपके लिए आपका

स्वास्थ्य होगा। इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का ख्याल रखने की आवश्यकता है। इस अवधि के दौरान आपको कोई गंभीर घातक बीमारी होने की संभावना है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप नियमित तौर पर अपने स्वास्थ्य की जाँच करवायें और किसी भी प्रकार की समस्या होने पर तुरंत अपने डॉक्टर की सलाह लें।

आर्थिक रूप से भी आपको अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार में किये गए निवेश में आपको हानि हो सकती है या आप किसी प्रकार की धोखाधड़ी का शिकार हो सकते हैं। आपकी आय में कौटूट्य या नौकरी जाने की संभावना भी बन सकती है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने पैसों को खर्च करते हुए थोड़ी सावधानी बरते ताकि आप कुछ पैसों की बचत कर सकें। आपको इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए की पैसे का निवेश कहाँ और कैसे किया जाना चाहिए ताकि हानि की संभावना बहुत कम बने। धन की कमी की वजह से आपको अपनी विलासिता भरी ज़िंदगी की कुछ चीजों का भी त्याग करना पड़ सकता है।

कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी/खेजड़ी के पेड़ या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी हवन में उपयोग कर सकते हैं। संकटा तथा उल्का दशा के दौरान उपाय करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि: 1-2-2026 19:55

समाप्ति तिथि: 23-8-2027 23:55

संकटा योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि केवल 10 दिनों को मानी जाती है तथा इसके स्वामी के रूप में "शुक्र" को जाना जाता है। शुक्र के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी आपके जीवन में अनुकूलता और अच्छे समाचार ही लेकर आता है।

ये अवधि आपकी जीवन में चल रही परेशानी को दूर करने में आपकी मदद कर सकती है। इस अवधि के दौरान आपको अपने लक्ष्य को प्राप्त करने तथा जीवन में आगे बढ़ने के अनेक मौके मिलेंगे। इस अवधि के दौरान आपके आत्मविश्वास में भी बढ़ोतरी होगी जिसकी वजह से आपको आवश्यक समर्थन, प्रोत्साहन और ऊर्जा मिल सकती है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके काम से खुश हो कर आपको ईनाम दे सकते हैं और आपकी आय वृद्धि या पदोन्नति की उम्मीद भी बढ़ जाती है। आपके लिए ये अवधि एक सकारात्मकता लेकर आएगा जिसमें आप अपने किसी भी कार्य को अंजाम दे सकते हैं, इसलिए ये अवधि आपकी परियोजनाओं को शुरू करने के लिए भी बिल्कुल सही साबित होगा। इस अवधि में आपको अन्य कोई परेशानी नहीं रहेगी जिसकी वजह से आप अपना पूरा ध्यान अपनी परियोजना पर लगा सकते हैं।

ये अवधि आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होगा, इस अवधि में आप मन से शांत और स्थिर महसूस करेंगे।

आपका व्यक्तिगत जीवन भी इस अवधि के दौरान बहुत अच्छा रहेगा। आपके परिवार और जीवनसाथी के साथ संबंध प्रगाढ़ होंगे साथ ही आपके बच्चों आपको अपनी पढ़ाई या नौकरी से जुड़ी कुछ खुशखबरी सुना सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और बच्चों से साथ समय व्यतीत करने का मौका भी मिलेगा। आपके परिवार वाले आपसे बेहद खुश रहेंगे।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी आपको चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है किन्तु फिर भी आपको अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए ताकि भविष्य में भी किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। आपको सलाह दी जाती है कि आपको जो अवसर प्राप्त हो रहें हैं, उन अवसरों का अच्छी तरह से उपयोग करें और अधिक से अधिक लाभ कमा सकें ताकि कल को आपको किसी भी बात की ग्लानी न रहें कि आपने सही समय पर सही फैसला नहीं लिया।

मंगला योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि: 23-8-2027 23:55

समाप्ति तिथि: 23-8-2028 23:55

'मंगला मंगलम करोत सर्वदा' अर्थात् ये दशा हमेशा आपका मंगल करती है। मंगला दशा को पहला योगिनी दशा माना गया है। मंगला दशा के स्वामी 'चंद्रमा' को माना गया है तथा इसकी 'एक वर्ष' की दशा मानी गयी है। मंगला योगिनी को शुभ दशा माना गया है किन्तु ये बिल्कुल जरूरी नहीं है कि ये दशा अपनी पूर्ण अवधि में शुभ फल ही देगा क्योंकि प्रत्येक योगिनी के दशा के साथ-साथ किसी दूसरे योगिनी की अंतर्दशा भी चलती रहती है। जिस प्रकार का योगिनी दशा है उसी प्रकार का यदि योगिनी अन्तर्दशा हो तो उसका सर्वाधिक शुभ फल आपको प्राप्त हो सकता है। मंगला दशा में आपकी धार्मिक कार्य में रुचि बढ़ती है, आपको पूजा-पाठ करना, धार्मिक स्थानों पर जाना तथा धार्मिक लोगों से मिलना इत्यादि पसंद होता है तथा ये सारी गतिविधियों से आपके मन को शांति भी मिलती है। आपको भौतिक सुख- सम्पत्ति की प्राप्ति होती है और आप एक आरामदायक जीवन व्यतीत करते हैं।

यदि आप किसी सरकारी क्षेत्र में कार्यरत हैं तो आपको आधिकारिक रूप से उस क्षेत्र के संवहन की जिम्मेदारी को संभालने का मौका मिलेगा। इस दशा के दौरान यदि आप कोई उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए अपना नामांकन करवाते हैं तो ये आपके लिए शुभ परिणाम लायेगा। चूंकि मंगला दशा के स्वामी चंद्रमा है इसलिए इसका सीधा प्रभाव आपके व्यक्तिगत सम्बन्ध पर पड़ेगा, आपको अपने विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण होगा, उनके साथ संबंध अच्छे होंगे इसके साथ ही आपके विवाह होने की संभावना भी बनती है। चंद्रमा को माता का प्रतीक भी कहा गया है इसलिए इस दशा के लोगों को अपनी माता की सेहत का ध्यान रखने की सलाह दी जाती है।

उपाय

- आप पलाश के पेड़ के उत्पादों जैसे लकड़ी, फूल और पत्तियों का उपयोग कर सकते हैं। सफेद चंदन, सीपियां, पानी और रेशे वाला नारियल तथा नारियल के रेशों से बनी वस्तुओं के उपयोग से हवन करना लाभकारी रहेगा। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करने से लाभ प्राप्त होगा। इन उपायों को लाभ मंगला भ्रामरी दशा के दौरान भी प्राप्त होगा। इसके साथ ही मंगला उत्का दशा तथा मंगला संकटा दशा के दौरान इन उपायों करने से भी आपको बहुत लाभ मिलेगा।
- आप अपनी मंगला महादशा के दौरान दो मुखी रुद्राक्ष धारण कर इसका लाभ उठा सकते हैं।

मंगला - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि: 23-8-2027 23:55

समाप्ति तिथि: 3-9-2027 3:25

मंगला योगिनी की पहली अन्तर्दशा 'मंगला अन्तर्दशा' ही है। इस अन्तर्दशा की अवधि 22 दिनों तक चलती है। इस अन्तर्दशा का समय आपके लिए नये संबंध स्थापित करने के लिए काफी शुभ है। इस समय आप नये मित्र बना सकते हैं साथ ही आप नये संघ नये क्षेत्र में अपने सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं जो आपके भविष्य बनाने या व्यापार करने में मददगार साबित होगी। इस समय आप किसी भी कार्यक्रम या सम्मलेन में भाग लेने के किसी

भी अवसर से न चुकें।

मंगला अन्तर्दशा आपके लिए कई शुभ समाचार लायेगा। ये समय आपके लिए हर तरह से शुभ है। मंगला अन्तर्दशा आपके लिए कमाई और धन वृद्धि के अवसर लायेगा। इस दौरान आपके घर में कई शुभ कार्य होने की संभावना है जैसे आपके परिवार में विवाह की संभावना बन सकती है, आपके घर या कार खरीदने के लिए धन प्राप्ति की संभावना है। आप घर में हवन या पूजा करवाने में सक्षम होंगे। ये अन्तर्दशा आपके लिए वैवाहिक सुख, जीवनसाथी का सहयोग और साथ लायेगा साथ ही आपको संतान सुख की भी प्राप्ति होगी। इस दशा आपके और आपके जीवनसाथी के लिए अच्छा समय ले कर आयेगा, आप अपने जीवनसाथी के साथ बाहर घूमने जा सकते हैं तथा एक-दूसरे के साथ अच्छा वक्त बिताने का भी अवसर आपलोगों को प्राप्त होगा।

मंगला - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि: 3-9-2027 3:25

समाप्ति तिथि: 23-9-2027 10:25

मंगला योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। पिंगला दशा के स्वामी "सूर्य देव" है तथा इस अंतर्दशा की अवधि 30 दिनों तक चलती है। इस अन्तर्दशा को प्रतिकूल अंतर्दशा माना गया है। इस अवधि पर सूर्य का शासन है। यह 30 दिनों तक चलता है। यह आमतौर पर एक प्रतिकूल अवधि है। इस अवधि के दौरान आप मानसिक चिंता, तनाव, भावनात्मक क्षति का अनुभव कर सकते हैं। पिंगला अन्तर्दशा का प्रभाव व्यक्तिगत संबंधों पर भी पड़ता है। आपके परिवार में एक-दूसरे के साथ संबंध खराब हो सकते, उनके बीच मतभेद तथा झगड़े इत्यादि हो सकते हैं। व्यक्तिगत सम्बन्ध के अलावा ये अवधि आपके रोजगार के क्षेत्र के लिए भी शुभ नहीं होता। आपके रोजगार जीवन में भी कई परेशानी आ सकती है। आपके कार्य करने की क्षमता में एकाग्रता की कमी होने की संभावना है जिसकी वजह से आप पदोन्नति के मौके से भी वंचित रह सकते हैं।

इस अवधि के दौरान आपके अपने मित्रों से मिलने की संभावना भी कम हो जाती है। ये पूरी अवधि आपके लिए शुभ नहीं रहेगा, आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ समस्या हो सकती है। पूर्ण रूप से देखे तो ये पूरी अवधि आपके लिए कष्टकारी होगी, इसलिए आपको सलाह दी जाती है कि आप थोड़ी सावधानी बरतें। जितना हो सके उतना अपने मन को शांत रखने की कोशिश करें, धैर्य बना के रखें और अपने हर कार्य को पूरी लगन और समझदारी के साथ करें।

आपको अपने साथियों और प्रबंधकों के साथ मिलना भी मुश्किल हो सकता है।

चूंकि यह अवधि तनाव और दुख से भरी हुई है, इसलिए यह आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। यह सलाह दी जाएगी कि आप सावधानी बरतें और अपनी महत्वपूर्ण बातों पर नियंत्रण रखें। कुल मिलाकर, शांत रहना, धैर्य का अभ्यास करना और जितना हो सके अपने काम को पूरी लगन से करने पर ध्यान देना ही समझदारी होगी।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ के फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी तथा आंवला जैसी वस्तु अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या एक से अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करना लाभकारी सिद्ध होगा।

- मंगला महादशा के दौरान दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

मंगला - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि: 23-9-2027 10:25

समाप्ति तिथि: 23-10-2027 20:55

मंगला योगिनी की तीसरी अन्तर्दशा "धान्या अन्तर्दशा" है। धान्या अन्तर्दशा के स्वामी "बृहस्पति" को माना गया है तथा इसकी अवधि 40 दिनों की होती है। प्रायः इस अवधि को शुभ अवधि के रूप में माना जाता है। ज्योतिष में ये माना गया है की बृहस्पति भाग्य, सौभाग्य, धन-वृद्धि, तरक्की का प्रतीक है। यदि आपको संतान की प्राप्ति नहीं हुई है तो इस अवधि के दौरान आपको संतान प्राप्ति की खबर प्राप्त हो सकती हैं। जिनको संतान प्राप्त हो चुका है, उनके बच्चों के लिए ये अवधि शुभ है। उन बच्चों को अच्छे अंक प्राप्त होंगे, अच्छा प्रदर्शन करेंगे तथा अच्छे कॉलेज या विद्यालय में प्रवेश भी मिल सकता है। आपके आय वृद्धि या अपने मित्र की मदद से धन अर्जित करने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपको एक अच्छी नौकरी तथा व्यापार में निवेश करने के अवसर प्राप्त होंगे।

धान्या अंतर्दशा आपके लिए बेहतरीन अवसर ले कर आती है। इस दशा में अपनी पसंद की चीजें खरीद सकते हैं, अपनी पसंद की गाड़ी, घर इत्यादि भी ले सकते हैं। इसके अलावा घर का नवीनीकरण, गहने खरीदने की संभावना भी बन सकती है।

मंगला - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि: 23-10-2027 20:55

समाप्ति तिथि: 3-12-2027 10:55

मंगला योगिनी की चौथी अंतर्दशा "भ्रामरी" है। इस अंतर्दशा के स्वामी "मंगल" है, तथा इसकी अवधि 49 दिनों तक चलती है। ये अवधि शुभ और अशुभ दोनों तरह के प्रभाव के मिश्रण की अवधि है। यदि इस अवधि के नकारात्मक पक्ष को देखें तो आपको वैवाहिक जीवन में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। जीवनसाथी के साथ मतभेद हो सकता है, इसके अलावा आपको अपने विपरीत लिंग के लोगों के साथ जुड़े संबंधों के विभागे में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। धन कमाने और उसके संचय, किसी व्यापार में निवेश के लिए भी ये समय आपके लिए शुभ नहीं होगा। वही अगर इसके सकारात्मक पक्ष को देखें तो इसके कुछ शुभ प्रभाव भी हैं जैसे आपको सरकारी क्षेत्र में उन विभागों से जुड़े लोगों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने का अवसर प्राप्त होगा। आपको आपके काम के सिलसिले में विदेश की यात्रा करनी पड़ सकती है। इस दशा अवधि में आपके धन के क्षेत्र में शुभ और अशुभ दोनों तरह के प्रभाव प्राप्त होंगे इसलिए किसी भी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले उस दस्तावेज को अच्छी तरह से जाँच लें। विदेश की यात्रा करते समय अपनी कीमती सामना का ध्यान रखें।

उपाय

- मंगल ग्रह की स्थिति को मजबूत करने के लिए बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, ब्रह्मारी, साबुत लाल मिर्च, काली सरसों और हरड़ का उपयोग आपको करना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ पीपल का भी उपयोग करना चाहिए। मंगला भ्रामरी दशा के दौरान उसकी स्थिति में सुधार करने के लिए किये जाने वाले हवन में इन पेड़ों की टहनी, पत्तियाँ का उपयोग कर सकते हैं। ये उपाय आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

- मंगला महादशा के दौरान दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

मंगला - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि: 3-12-2027 10:55

समाप्ति तिथि: 23-1-2028 4:25

मंगला योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "भद्रिका" है। इस अन्तर्दशा के स्वामी "बुध" है, तथा यह अंतर्दशा 60 दिनों तक चलती है। इस अवधि को अनुकूल और शुभ अवधि माना गया है।

बुध की पांचवी अन्तर्दशा के दौरान आपको धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। यह अवधि आपके वैवाहिक जीवन के लिए भी काफी शुभ है तथा आपके बच्चों के साथ आपके लिए भी ये समय शुभ है। आप अपने जीवनसाथी के साथ तथा अपने बच्चों के साथ खुशहाल समय व्यतीत करेंगे और आपका सभी के साथ एक संबंध स्थापित होगा। आपके पूरे परिवार में खुशहाली का माहौल होगा और सभी खुश रहेंगे। आपके मित्रों के साथ भी आपके संबंध में इस अवधि के दौरान सुधार आयेंगे। आपके अपने पुराने मित्रों से मिलने की संभावना है। उनसे मिलने के बाद आप उनके साथ एक अच्छा समय व्यतीत करेंगे जैसे बाहर घूमना या सिनेमा देखने जाना इत्यादि।

इस अन्तर्दशा के दौरान आपका ईश्वर के साथ भी प्रगाढ़ संबंध स्थापित होगा। आपकी धार्मिक कार्यों के रुचि बढ़ेगी और आप हवन, पूजा-पाठ जैसे कार्य में भी अपना समय देंगे इसके साथ ही आप तीर्थ यात्रा पर भी जा सकते हैं।

मंगला - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि: 23-1-2028 4:25

समाप्ति तिथि: 24-3-2028 1:25

मंगला योगिनी की छठी अंतर्दशा "उल्का" है। इस अन्तर्दशा के स्वामी "शनि" है। इस अंतर्दशा की अवधि 70 दिनों की होती है। इस अन्तर्दशा को अशुभ प्रभाव वाली अवधि माना गया है।

चूंकि शनि देव इस अन्तर्दशा के कार्यपालक है, अतः इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ चुनौतियों का सामना करना स्वाभाविक है। इस अवधि के दौरान आपको और आपके परिवार को अनेक कठिनाईयों से गुजरना पड़ सकता है तथा आपके लिए ये एक मुश्किल से भरा दौर हो सकता है। आपकी किसी ऐसी गतिविधि में उलझने की संभावना है जो जिसका परिणाम घातक हो सकता है। आप धन की धांधली या किसी व्यापार में हो रहे हानि के जिम्मेदार ठहराये जा सकते हैं, आपकी ईमानदारी पर उंगली उठ सकती है। आपको किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले उस कार्य के विवरण को अच्छे से समझ लेना चाहिए।

बच्चों को स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याओं हो सकती है और उनको पढ़ाई में भी कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है जिसका असर उनके प्रतियोगिता पर भी पड़ता है। आपके जीवनसाथी के लिए भी ये अंतर्दशा कठिन हो सकता है जैसे उनको स्वास्थ्य संबंधी समस्या, तनाव या अन्य कई तरह की परेशानी झेलना पड़ सकता है। आपके चारों तरफ नकारात्मकता का असर देखा जा सकता है इसलिए इस अवधि के दौरान आपको अपने मन को शांत रखने की आवश्यकता है।

उपाय

- मंगल ग्रह की स्थिति को मजबूत करने के लिए आपको बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, महरी, साबुत लाल मिर्च, काली मिर्च और हरड़ का उपयोग कर हवन करना चाहिए। अपने घर में इन मुख्य सामग्री के साथ आप पीपल का भी उपयोग कर सकते हैं।

मंगला भ्रामरी दशा के दौरान उसकी स्थिति में सुधार करने के लिए इन पेड़ों की टहनी में रहने वाले घरों का उपयोग कर सकते हैं। आपके लिए ये उपाय लाभकारी सिद्ध होगा।

- मंगला महादशा के दौरान दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

मंगला - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि: 24-3-2028 1:25

समाप्ति तिथि: 3-6-2028 1:55

मंगला योगिनी में सातवीं अंतर्दशा "सिद्धि" है। इस अन्तर्दशा के स्वामी "शुक्र" है, तथा यह 80 दिनों तक चलता है। यह आमतौर पर एक सकारात्मक और अनुकूल अवधि है। चूँकि शुक्र प्रेम, सम्भोग और विलासिता पर शासन करता है, इसलिए यदि आप विवाह योग्य हो गए हैं और एक उपयुक्त जीवनसाथी की तलाश में हैं तो आपको इस अवधि के दौरान आपको आपके पसंद के जीवनसाथी के साथ विवाह होने की संभावना है। जो लोग पहले से शादीशुदा हैं उनका वैवाहिक संबंध बहुत सुखद हो सकता है, जीवनसाथी के साथ प्रणय संबंध भी अच्छा है। आपको आपके संतान से सुख प्राप्त होगा, आपके बच्चों आपके लिए खुशखबरी ला सकते हैं उनके द्वारा चुने गये विद्यालय या कॉलेज में उनका नामांकन होने की संभावना है। रोजगार के क्षेत्र में आपकी पदोन्नति हो सकती है।

रोजगार या कामकाज के क्षेत्र के लिए भी ये समय अनुकूल हो सकता है। आप जिस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, ऐसी संभावना है आपको वहां लाभ प्राप्त हो सकता आपके पद में उन्नति हो सकती है। इस समय के दौरान आप अपने सुख-सुविधा की सारी चीजें खरीदेंगे और अपने जीवन को आरामदायक बनाने की हर संभव चीजें अपने घर लायेंगे। आप अपने परिवार और अपने मित्र के साथ आप अच्छे समय का आनंद लेंगे।

मंगला - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि: 3-6-2028 1:55

समाप्ति तिथि: 23-8-2028 23:55

मंगला योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "संकटा" है। इस अन्तर्दशा का स्वामी "राहु" है, इसकी अवधि 14 दिनों तक चलता है। संकटा नाम से ही पता कि ये अवधि चुनौतीपूर्ण और कठिन होती है।

ये अवधि कुछ अशुभ चीजें ले कर आ सकती है। मंगला योगिनी की अंतिम अंतर्दशा के दौरान, आपके घर में डकैती, घर या कार्यालय में आग लगने जैसी विभिन्न दुर्घटनाओं घट सकती हैं। आपको पानी से भी खतरा है जिसकी वजह से आपको समुद्र तट या झील जैसे जल निकाय वाली जगह से दूर रहने की सलाह दी जाती है और पानी के क्षेत्र में आपको सावधानी बरतने की जरूरत है।

आपको अपने व्यवसाय या रोजगार के क्षेत्र में संभल के कार्य करना चाहिए। आप ध्यान रखें कि आपके सभी कार्य को अच्छे तरीके से करें नहीं तो आपका काम या व्यवसाय जांच के दायरे में आ सकता है। "राहु" को मृत्यु के प्रतीक के रूप में भी जाना जाता है या मृत्यु जैसे अनेक कष्टों के प्रतीक के रूप में जाना जाता है, इसलिए इस दौरान आपको अपने और अपने प्रियजनों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

उपाय

- राहु की स्थिति को मजबूत करने के लिए मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजों का उपयोग करना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हवन में हरी दूर्वा घास का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला संकटा दशा के दौरान उपाय करने से आपको इसके कई लाभ प्राप्त होगा।

- मंगला महादशा के दौरान दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

पिंगला योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि: 23-8-2028 23:55

समाप्ति तिथि: 23-8-2030 23:55

योगिनी दशा क्रम के दूसरे चरण में पिंगला योगिनी दशा आती है। पिंगला का स्वामी "सूर्य" है, जिसे एक क्रूर ग्रह है। सूर्य से संबंधित इस दशा में व्यक्ति को संघर्ष की स्थिति का सामना करना पड़ता है। इस दशा की अवधि 2 वर्ष की होती है। पिंगला योगिनी दशा में आपको शारीरिक कष्ट के साथ-साथ मन में द्वंद की स्थिति बनी रहती है, धन का नाश होता है, जमीन से जुड़े कार्य में विवाद होता है तथा घर परिवार से दूर जाना पड़ सकता है। पिंगला योगिनी दशा में पूरे दो वर्ष एक जैसे नहीं रहते, इसकी अंतर्दशा शुरू हो जाने के बाद शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के प्रभाव मिलते हैं। पिंगला अंतर्दशा में सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्य में जैसे सरकारी अधिकारी, प्रबंधन, अधिकारियों के आंकड़ों में कुछ समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इस समय में आपकी अधिकांश समस्या आपके व्यवहार और आपके बिना सोचे लिए गए निर्णय लेने की वजह से उत्पन्न होगी। यदि आप सावधानी से काम नहीं लेंगे तो आपको धन हानि हो सकती है।

चूँकि सूर्य देव पुरुष का प्रतीक हैं, इसलिए इस अवधि के दौरान अपने पिता और अपने घर के पुरुष रिश्तेदार के स्वास्थ्य और उनकी भलाई का ध्यान रखना जरूरी है। ऐसी संभावना है कि इस अवधि के दौरान उनको कठिन समय का सामना करना पड़ सकता है या वो बीमार पड़ सकते हैं। इस अंतर्दशा की सभी चुनौतियों और कठिनाइयों के कारण, आप तनावग्रस्त या उदास महसूस कर सकते हैं। कई बार आप अपनी परेशानियों से बाहर आने के लिए कुछ अनैतिक मार्ग अपनाने का सोचते हैं किन्तु आपको ऐसी चीजों से खुद को दूर रखना चाहिए।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ का फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी, और आंवला रख सकते हैं या उपयोग कर सकते हैं। इनमें से एक या अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि यह प्रसन्न होगा भगवान सूर्य। अपनी पिंगला भ्रामरी दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ होगा।

- पिंगला महादशा के दौरान एक मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

पिंगला - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि: 23-8-2028 23:55

समाप्ति तिथि: 3-10-2028 13:55

पिंगला योगिनी की पहली अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इस अंतर्दशा की अवधि 60 दिनों तक चलती है। सामान्यतः इस अवधि को कठिन समय माना जाता है, जिसमें आपको कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इस पूरे 60 दिनों की अंतर्दशा के दौरान आपको कुछ न कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है। आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्या का सामना करना पड़ सकता है, जिसका उपचार लम्बे समय तक चलने की संभावना है। आपको अपने सेहत का ध्यान रखना चाहिए। इस अंतर्दशा के दौरान आपको आपके मित्र या रिश्तेदारों से कुछ बुरे समाचार मिलने की संभावना है जिसकी वजह से आपके जीवन में परेशानियां और बढ़ेगी ही। आपको अपने रोजगार के क्षेत्र में भी नुकसान हो सकता है या कुछ चुनौतियों का आपको सामना करना पड़ सकता है, जैसे आपको अपनी रोजगार से संतुष्टि नहीं होगी या फिर आपकी कंपनी आपके कार्य से संतुष्ट नहीं होगी। आपके करियर को आगे बढ़ाने में भी आपको कुछ समस्या हो सकती है। आपको अपनी सेहत और आपके जीवन में आ रही समस्याओं की वजह से आप चिंतित रह सकते हैं और ये तनाव लगातार बढ़ता ही रहेगा। ऐसा अक्सर देखा जाता है कि कठिन समय में हम अपनी बुराइयों के आगे झुक जाते हैं और सब कुछ ठीक करने के लोभ में गलत तथा अनैतिक मार्ग को अपना लेते हैं। जबकि आदर्शतः देखा जाये तो समय चाहे कैसा भी हो हमेशा नैतिकता के मार्ग पर चल कर सही का साथ देना चाहिए और जीवन में सकारात्मकता को बनाये रखना चाहिए। इसलिए आप भी कठिन समय को देख घबरा कर कोई भी फैसला न लें, अपने मन को शांत रखें क्योंकि शांत मन ही सही मार्ग को दिखा सकता है।

पिंगला - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि: 3-10-2028 13:55

समाप्ति तिथि: 3-12-2028 10:55

पिंगला योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "धान्या अंतर्दशा" है। ये अंतर्दशा 82 दिनों तक चलता है, इस अवधि के स्वामी "बृहस्पति" है। इस अंतर्दशा की अवधि सुखद और अनुकूल समय माना गया है, जिसमें शुभ कार्य होने की संभावना जताई जाती है। इस अवधि के स्वामी बृहस्पति हैं जो धन, वैभव और वृद्धि प्रदान करते हैं। इस अवधि के दौरान आपके सभी शुभ कार्य संपन्न होंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी, धन संचय में वृद्धि होगी, अच्छे कपड़े, भौतिक सुख-सुविधा की सभी साधन प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा। आपको अपने बेहतर भविष्य को और बेहतर बनाने के लिए कहीं अच्छे जगह पर जान की संभावना है। बृहस्पति की कृपा से आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। यदि आप अपने परिवार को आगे बढ़ाने की योजना बना रहे हैं तो इस अवधि के दौरान आपको खुशखबरी मिल सकती है। यदि आप अपने जीवन के लिए कुछ योजना बना रहे हैं तो ये समय आपके लिए शुभ है। आप एक शानदार छुट्टी, उच्च शिक्षा के लिए नामांकन, या फिर किसी बेहतर नौकरी की तलाश कर रहे हैं तो ये समय आपको सब हासिल करने में मददगार साबित होगा। आप अपना कोई भी शुभ कार्य इस अवधि के दौरान शुरू कर सकते हैं। आपको अपने विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण हो सकता है, और उनके साथ एक अच्छा संबंध स्थापित करने में आप सफल होंगे।

पिंगला - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि: 3-12-2028 10:55

समाप्ति तिथि: 22-2-2029 14:55

मंगल की स्थिति को मजबूत करने के लिए बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, ब्रह्मारी, साबुत लाल मिर्च, काली सरसों और हरड़ का उपयोग आप हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ पीपल के पेड़ का छाल का भी उपयोग कर सकते हैं। पिंगला ब्रह्मारी दशा के दौरान पेड़ की टहनी, पत्तियां इत्यादि से हवन करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

पिंगला योगिनी की तीसरी अन्तर्दशा "भ्रामरी" है। ये अन्तर्दशा 100 दिनों तक चलता है। इस अंतर्दशा के स्वामी मंगल है। ये अंतर्दशा जरूरी नहीं है कि हमेशा शुभ या अशुभ परिणाम ही देगा। ये अवधि अपने साथ मिश्रित परिणाम ले कर आता है जिसकी वजह से आप अपनी मेहनत और किस्मत से इसके परिणाम को प्राप्त करते हैं। ये अन्तर्दशा आपके लिए यात्रा का योग ले कर आती है, आपको विदेश यात्रा या फिर किसी काम के उद्देश्य से लंबी यात्रा करना पड़ सकता है। चूंकि ये अवधि मिश्रित परिणाम देती है तो अच्छे प्रभाव के साथ आपके साथ कुछ बुरा होने की संभावना भी है, इसलिए यात्रा करने के दौरान अपने सामान की रक्षा खुद करें और अपने साथ या तो कीमती सामान ले कर यात्रा न करें या फिर उस कीमती सामान का खुद ध्यान रखें। आपको कुछ आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है उसके साथ ही आपके घर में चोरी या डकैती होने की संभावना भी है। मंगल का प्रभाव आपके व्यक्तिगत रिश्तों पर भी पड़ सकता है। आपका आपके परिवार या रिश्तेदारों से किसी बात को ले कर कुछ विवाद या मनमिटाव हो सकता है, जिसकी वजह से आपके रिश्तों में तनाव होने की संभावना है। अपने परिवार के बीच के मतभेद को खत्म करने के लिए आपको उनके साथ बात करना चाहिए, बातचीत कर के आप अपने परिवार के बीच के मतभेद को खत्म कर सकते हैं। कई ऐसी परिस्थिति आयेगी जिसमें आपका और आपके परिवार के बीच कुछ गलतफहमी हो सकती है, इसलिए आपको अपने हर संबंध का ध्यान रखना चाहिए और उसमें आयी किसी भी दिक्कत को खत्म करने का प्रयास करना चाहिए।

उपाय

- मंगल की स्थिति को मजबूत करने के लिए बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, ब्रह्मारी, साबुत लाल मिर्च, काली सरसों और हरड़ का उपयोग आप हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ पीपल के पेड़ का छाल का भी उपयोग कर सकते हैं। पिंगला ब्रह्मारी दशा के दौरान पेड़ की टहनी, पत्तियां इत्यादि से हवन करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- पिंगला महादशा के दौरान एक मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

पिंगला - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि: 22-2-2029 14:55

समाप्ति तिथि: 4-6-2029 1:55

पिंगला योगिनी की चौथी अन्तर्दशा "भद्रिका अंतर्दशा" है। यह अवधि 119 दिनों तक चलता है तथा इसके स्वामी "बुध" है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि इस अंतर्दशा के परिणाम शुभ होते हैं तथा इस अंतर्दशा में किये गये कार्य शुभ-शुभ संपन्न होते हैं। मुख्य रूप से इस अवधि में आपको आपके बच्चों के माध्यम से कुछ अच्छी खबर मिल सकती है जैसे वो अपने विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं या कोई अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह यह कहा जा सकता है कि ये अन्तर्दशा आपके बच्चों के लिए शुभ साबित होगा। यदि आप स्वयं किसी रोजगार की तलाश में हैं या किसी व्यापार में निवेश करना चाहते हैं तो आपकी इन कोशिशों का भी शुभ परिणाम आपको प्राप्त होगा। यदि आप कोई व्यवसाय कर रहे हैं तो आपको कोई बड़ा लाभ या कोई बड़ी परियोजना प्राप्त होने की संभावना है। आपके व्यक्तिगत रिश्ते भी प्रगाढ़ होंगे। इस अवधि में आपके मित्र या आपके व्यवसाय के सहयोगी हर किसी के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा होगा और उनके बीच आपकी प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। आप घर परिवर्तन करने की यदि कोई योजना हो तो ये समय आपके घर परिवर्तन के लिए शुभ साबित हो सकता है। आपके नौकरी में पद वृद्धि या वेतन वृद्धि की भी संभावना बन सकती है।

पिंगला - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि: 4-6-2029 1:55

समाप्ति तिथि: 3-10-2029 19:55

पिंगला योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 142 दिनों तक चलती है तथा इसके स्वामी "शनि देव" है। चूँकि शनि देव इस अंतर्दशा के स्वामी है तो इसका प्रभाव और परिणाम भी कुछ कठोर हो सकता है। शनि द्वारा शासित अवधि आमतौर पर आसान नहीं होती है। शनि के प्रभाव की वजह से आपके व्यक्तिगत संबंध में कुछ मतभेद हो सकते हैं, मन मिटाव हो सकता है या रिश्तों में आयी परेशानी आपके दुःख का कारण बन सकता है। आपके रिश्तेदारों या आपके मित्रों से आपका विवाद हो सकता है जिसकी वजह आपके बीच दूरियां और बढ़ सकती है। इन सभी परेशानियों की वजह से आप तनावग्रस्त रह सकते हैं। इन सभी दुःखों और तकलीफों का अंत ये है कि आप किसी भी कार्य को करते हुए सावधान रहें यदि आप सावधान नहीं रहते हैं तो इसका उल्टा प्रभाव आपके रिश्तों पर पड़ सकता है। आपके रोजगार के क्षेत्र में भी कुछ चीजें आपके प्रतिकूल होंगी। किसी परिस्थितिवाश आपके कार्य में आपसे कोई गलती हो सकती है जिसकी वजह से आपके वरिष्ठ अधिकारी आपको दण्डित कर सकते हैं। आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी कार्य को करते वक़्त आप सावधान रहें और किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत मुद्दों को अपने रोजगार पर हावी न होने दें। आपके घर में अपनी कीमती सामान और दस्तावेज की रक्षा आप स्वयं करें क्योंकि इस अवधि के दौरान आपके घर चोरी होने की संभावना भी बनी रहती है।

उपाय

- शनि की स्थिति को मजबूत करने के लिए कस्तूरी, सेमल के पेड़ की टहनियाँ, बेल के पत्ते या फल, और कैक्टस और गुलाब जैसे कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी के पेड़ लकड़ी या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी उपयोग आप हवन में कर सकते हैं। पिंगला तथा उल्का दशा के दौरान इन उपायों के करने आपको लाभ प्राप्त होगा।

- पिंगला महादशा के दौरान एक मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

पिंगला - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि: 3-10-2029 19:55

समाप्ति तिथि: 22-2-2030 20:55

पिंगला योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "सिद्धि अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 159 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" है। ये अंतर्दशा अपने साथ शुभ और अशुभ दोनों ही परिणाम ले कर आती है, अतः ये मुख्य रूप से मिश्रित परिणाम देता है।

इस अवधि के दौरान आपको कई अच्छे मौके मिलेंगे जैसे आपकी आय वृद्धि के मौके, धन संचय करने के मौके और अपने भविष्य को बेहतर बनाने के इत्यादि प्रकार के मौके आपको मिल सकते हैं। यदि आप एक सही संगति और सही योजना के साथ कार्य करते हैं तो इस समय आपको अनेक प्रकार के फायदे हो सकते हैं। मंत्रों का प्रयोग भी आपके लिए लाभकारी साबित हो सकता है, और सही मंत्र ज्ञान के लिए आप किसी ज्योतिष की मदद ले सकते हैं। ये समय आपके शेयर बाजार में निवेश करने के लिए बेहद अनुकूल है, इस समय आप निवेश कर के अच्छा लाभ अर्जित कर सकते हैं। अधिक बेहतर विकल्प के लिए आपको किसी वित्तीय सलाहकार से मदद लेनी चाहिए ताकि आपको जो मौका मिला है आप उसका पूरा इस्तेमाल कर सकें। आपके धन अर्जित करने के लिए और आगे बढ़ने के लिए यदि ये समय अनुकूल है तो उतना ही प्रतिकूल आपकी सेहत के लिए है। इस

अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का पूरा ध्यान रखना चाहिए। आपको सेहत से सम्बंधित समस्या जैसे मधुमेह, सांस लेने की समस्या इत्यादि हो सकती है। अपने सेहत को सही बनाये रखने के लिए आपको एक सही जीवनशैली को अपनाना होगा और कोई भी ऐसी चीज जो आपकी सेहत के लिए अच्छा नहीं है उससे आपको दूर रहना होगा। अपनी सेहत संबंधी समस्या से बचने के लिए आप अपना सम्पूर्ण सेहत जाँच करवाते रहें और इसके साथ ही स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सावधानी भी बरतने की कोशिश करें तभी आप अपनी सेहत को सुधार पायेंगे।

पिंगला - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि: 22-2-2030 20:55

समाप्ति तिथि: 4-8-2030 4:55

पिंगला योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 35 दिनों की है, तथा इसके स्वामी "राहु" है। इस अंतर्दशा के शुरू होते ही आपका समय खराब चलना शुरू हो जाता है। इस अवधि के दौरान आपको जीवन में आयी कई चुनातियों का सामना करना पड़ता है। आपको आपके व्यापार में किये हुए निवेश में भी नुकसान को झेलना पड़ सकता है। आपका रोजगार का क्षेत्र भी आपके लिए कई चुनौती ले कर आएगा, आपको धन हानि इत्यादि का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्य में ध्यान केंद्रित करना मुश्किल लगने लगेगा, जिसकी वजह से आपके कुछ गलत निर्णय लेने की संभावना है, आपके इस गतिविधि की वजह से आपका विभाग आपको दण्डित भी कर सकता है। आपके दफ्तर में आपके सहकर्मी यदि जरूरत के समय आपका साथ नहीं देते हैं तो ऐसे व्यक्ति से आप थोड़ा दूरी बना कर रखें, यही आपके लिए बेहतर होगा। आपके सहकर्मी आपकी छवि को खराब करने और आपकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। आपके कार्य क्षेत्र के अलावा आपको कुछ चुनौतियों का सामना अपने व्यक्तिगत जीवन और रिश्तों में भी करना पड़ेगा। आपके मित्र और आपके रिश्तेदार आपके लिए घातक हो सकते हैं, मित्र के लिबास में वो आपके लिए शत्रु जैसा कार्य करेंगे। इसलिए आपको ऐसे लोगों से दूर रहने की सलाह दी जाती है।

यदि आपकी सेहत की बात की जाये तो सेहत के लिए भी ये समय ठीक नहीं चल रहा है। आपको अपने सेहत का ध्यान रखना चाहिए और अपने स्वास्थ्य की नियमित जांच करवाते रहें और उस हिसाब से सरे एतिहात बरतने की कोशिश करें।

उपाय

- राहु की स्थिति को मजबूत करने के लिए मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग करना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हवन में हरी दूर्वा घास का भी प्रयोग करना चाहिए। पिंगला तथा संकटा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

- पिंगला महादशा के दौरान एक मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

पिंगला - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि: 4-8-2030 4:55

समाप्ति तिथि: 23-8-2030 23:55

पिंगला योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 33 दिनों की होती है और इसके स्वामी "चन्द्रमा" है। इस अंतर्दशा का यदि परिणाम देखा जाये तो ये भी प्रतिकूल परिणाम ही लाती है। इस अवधि के दौरान आपके साथ कुछ बहुत अच्छा होने की संभावना नहीं है। चंद्रमा की ये अंतर्दशा आपके लिए स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं ले कर आती है। आपको सेहत से जुड़ी समस्याओं की वजह से आप अपने जीवन की गुणवत्ता को धीरे-धीरे खोने लगेंगे और ये समस्याएं आपकी शक्ति को भी कम कर देगी। इसलिए ये बेहद जरूरी है कि आप अपनी सेहत का पूरा ध्यान रखें और सेहत से जुड़ी किसी भी बात पर पूरे सतर्क और सावधान रहें। यदि आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ ज्यादा परेशानी हो रही है तो आप तुरंत डॉक्टर की सलाह लें। आपकी चिंता और आपके तनाव का एक कारण आपके परिवार और करीबी रिश्तेदार भी हो सकते हैं। उनकी वजह से आपको कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसी परिस्थिति में सबसे जरूरी है कि आप अपना धैर्य न खोये और शांत मन से विचार करें। यदि आप इन समस्याओं से निजात चाहते हैं तो आपको किसी भी मामले में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, ऐसा करना आपके हालात को और खराब कर सकता है। ऐसी संभावना है कि आपके माता-पिता के लिए हालात और परिस्थिति अच्छी न हो तो ऐसी स्थिति में आप उनका ख्याल रखें और जब-जब उनको आपकी मदद की आवश्यकता होगी तब-तब आप उनकी सहायता के लिए वहां मौजूद रहें। आपके जीवन में आयी इतनी सारी परेशानी आपको तनाव में डाल सकती है जिसकी वजह से आप चिंताग्रस्त हो सकते हैं। अतः आपको सलाह दी जाती है कि आप शांत मन से कोई भी कार्य करें ताकि कठिन समय में भी आप अपना जीवन यापन ठीक तरीके से कर पायें।

